

मन्हा राजकुमारे

एन्टोनी द सेंट एक्सपूपेरी



लेखक परिचय

एन्टोनी द सेंट एक्सूपेरी

बीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक एन्टोनी द सेंट एक्सूपेरी का जन्म सन् 1900 में हुआ था तथा शिक्षा 'लू मांस' के जेसुआइट कॉलेज और फ़ाइबुर्ग के सेंट ज्यॉ कॉलेज में हुई। सन् 1921 में वे हवाई सेना में एक पायलट के पद पर भर्ती हुए और 1923 तक फ्रांस और मोरक्को की उड़ानें करते रहे। उसके बाद उन्होंने उत्तर अफ्रीका में हवाई डाक सर्विस में काम किया। उसी दौरान उन्होंने अपनी पहली पुस्तक *कूरियर सूद* लिखी।

सन् 1931 में पेरिस लौटने के बाद उनकी पुस्तक *वो द नुइत* के प्रकाशन के कारण उनकी गणना फ्रांस के प्रमुख साहित्यकारों में होने लगी।

उड़ानों का एक रिकॉर्ड तोड़ने के लिए की गई पेरिस से सायगान की उड़ान के दौरान सहारा मरुस्थल में उनके हवाई जहाज़ की दुर्घटना हो गई और जहाज़ धरती पर आ गिरा। कई दिनों की प्यास के कारण वे मरने की अवस्था तक पहुँच गए। एक अरबी नागरिक ने उनकी किस प्रकार सहायता की इसका वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक *तैर दे जोम* में किया है।

दूसरे महायुद्ध के समय भी वे हवाई जहाज़ के पायलट थे। किंतु फ्रांस की हार हो जाने पर वे वहाँ से बचकर अमरीका चले गए। सन् 1943 में उत्तर अफ्रीका वापस आने के बाद जब सेंट एक्सूपेरी मैडिटेरेनियन महासागर के ऊपर एक टोही-उड़ान भर रहे थे, वे अचानक लापता हो गए। संभव है कि जर्मनी की फ़ौजों ने उन्हें मार गिराया होगा।

एक्सूपेरी द्वारा रचित बाल-साहित्य की श्रेष्ठतम कृति *द लिटिल प्रिंस* (नन्हा राजकुमार) बड़ों के लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण व लाभदायक है।



नन्हा राजकुमार

एन्टोनी द सेंट एक्सपूपेरी

(लेखक द्वारा बनाए गए चित्रों के साथ)

अनुवाद
देवी प्रसाद



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2054 – नन्हा राजकुमार
एन्टोनी द सेंट एक्सपेरी

ISBN 81-7450-772-8

प्रथम संस्करण

जुलाई 2007 आषाढ़ 1929

पुनर्मुद्रण

जुलाई 2012 आषाढ़ 1934

अगस्त 2019 श्रावण 1941

जून 2020 ज्येष्ठ 1942

अगस्त 2022 भाद्रपद 1944

PD 7T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम.
पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली
110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित
तथा रास टेक्नोप्रिंट, ए-93, सेक्टर-65,
नोएडा-201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी फोटोप्रतिनिधि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारों पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पच्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्टेल्केरे
बनाशंकरी III स्टेज
बंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पानिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत
मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक : विपिन दिवान
मुख्य संपादक (प्रभारी) : बिज्ञान सुतार
संपादक : मीरा कांत
उत्पादन सहायक : सुनील कुमार

आवरण एवं सज्जा
जोएल गिल



लेयों वेर्थ को समर्पित

इस पुस्तक को एक सयाने व्यक्ति को समर्पित कर रहा हूँ इसलिए उन बच्चों से क्षमा माँगता हूँ जो इसे पढ़ेंगे। इस निर्णय के पीछे एक गंभीर कारण है, वे इस जगत में मेरे सबसे घनिष्ठ मित्र हैं। एक और कारण है, ये सयाने व्यक्ति हर चीज़ को समझते हैं, बच्चों के बारे में लिखी पुस्तकों को भी। एक तीसरा कारण भी है, वे फ्रांस में रहते हैं और वे भूखे हैं, त्रस्त हैं उन्हें ढाढ़स देने की ज़रूरत है।

अगर ये तीनों कारण काफ़ी नहीं हैं, तो मैं इस पुस्तक को उनकी बाल्यावस्था को समर्पित करूँगा। आखिर सभी सयाने पहले तो बच्चे ही होते हैं। हालाँकि उनमें से कुछ ही इस तथ्य को याद रखते हैं। इसलिए इस समर्पण को सुधार कर निम्नलिखित रूप में प्रकट करता हूँ—

बचपन के समय वाले लेयों वेर्थ को समर्पित

सेंट एक्सूपेरी





अनुवादक की ओर से

सन् चवालिस से मैं महात्मा गाँधी के सेवाग्राम आश्रम में 'नयी तालीम' के काम में लगा हुआ था। मेरी मुख्य प्रवृत्ति थी 'शिक्षा में कला का स्थान' विषय पर शोध-कार्य। बच्चों से लेकर विश्वविद्यालय के स्तर तक और प्रौढ़ शिक्षा में कला क्यों व कैसे? यह प्रश्न मेरे सामने था।

नई तालीम का काम देखने-समझने के लिए देश-विदेश से अतिथि आया करते थे। सन् तिरपन-चौवन का समय होगा, डेनमार्क के सुप्रसिद्ध लोकशिक्षाविद् पीटर मानिके नई तालीम परिवार के साथ कुछ दिन रहने के लिए आए हुए थे। वे बच्चों की चित्रकला कक्षा में कई बार आए। मुझसे उनकी खूब बातचीत होती थी। एक दिन उन्होंने मुझसे पूछा— “क्या तुमने *द लिटिल प्रिंस* पुस्तक पढ़ी है?”

मैं उस पुस्तक के बारे में नहीं जानता था। उन्होंने उसका थोड़ा वर्णन किया। मुझे अच्छा लगा और मैं उसे कहीं से भी पाने की कोशिश करने लगा।

एकाध महीने के बाद श्री मानिके की भेजी हुई *द लिटिल प्रिंस* की एक प्रति डाक से मेरे पास आ पहुँची। उसी दिन उसे दो बार पढ़ डाला, जैसे कि उसे घोट कर पी गया। पीटर मानिके ने मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया। मेरी इच्छा हुई कि आश्रम के बच्चों और अपने साथियों के लिए इस पुस्तक का अनुवाद करूँ। धीरे-धीरे, जब भी मौका मिला, थोड़ा-थोड़ा करके अनुवाद पूरा कर लिया।

कुछ मित्रों ने आग्रह किया कि मैं *द लिटिल प्रिंस* के इस अनुवाद को किसी प्रकाशक के पास भेजूँ। अनुवाद करते समय मेरे मन में प्रकाशन का विचार कभी नहीं आया था। तो भी सोचा कि चलो देख लें।

हिंदी के दो प्रमुख प्रकाशकों को पाण्डुलिपि भेज दी। अधिक समय नहीं लगा। पाण्डुलिपि वापिस आ गई। साथ में जो दो पत्र आए उनका सार था— “खेद है...”। मज़ा तो तब आया जब दूसरी वापसी पर पाण्डुलिपि के बीच से एक नोट मिला, जो प्रकाशक ने गलती से उसमें छोड़ दिया था। मुझे उस नोट को सुरक्षित रख लेना चाहिए था। खैर...



उसमें एकमात्र वाक्य था, जो लगभग इस प्रकार का था — पुस्तक का विषय — एक हवाई जहाज चलाने वाले की कहानी।

नीचे प्रकाशक के समीक्षक महोदय के हस्ताक्षर थे।

इस वाक्य की याद करके नन्हे राजकुमार का वह विचार जिसे उसने कई बार मन ही मन दोहराया था, मूर्तिमान होकर सामने आ जाता है — “सयाने सचमुच बहुत विचित्र होते हैं।”

लेकिन नन्हा राजकुमार सयानों की बातें देख-सुनकर कभी-कभी हँस दिया करता था, जो मेरे लिए बड़ा कठिन है। आखिर मैं भी तो सयाना हूँ।

नन्हे राजकुमार से कुछ और नहीं भी सीख सकूँ, केवल इतना ही अगर कर सकूँ कि वह मन में हमेशा बसा रहे और हर काम को करते-करते उसका चित्र मेरे सामने आता रहे। उसी चित्र को आपके सामने पेश करने में अपना सौभाग्य समझता हूँ।

देवी प्रसाद



नन्हा राजकुमार





मैं जब छह साल का था तब *सच्ची कहानियाँ* नाम की वन संबंधी पुस्तक में मैंने एक बहुत सुंदर चित्र देखा था। चित्र था— एक शाखा-अजगर का, जो किसी जानवर को निगल रहा था। यह है चित्र की नकल।



पुस्तक में लिखा था, “शाखा-अजगर अपने शिकार को बिना चबाए पूरा निगल लेते हैं। उसके बाद वे हिल-डुल भी नहीं सकते तथा उसे हज्म करने के लिए छह महीने तक सोते रहते हैं।”

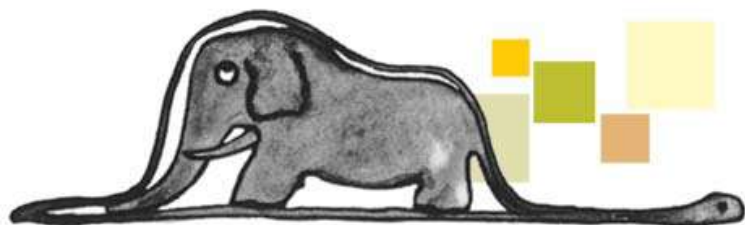
जंगल के पराक्रमों के बारे में मैंने खूब गहराई से सोचा। रंगीन पेंसिल से कुछ काम करने के बाद मैं अपनी पहली तस्वीर बनाने में सफल हुआ। वह मेरा चित्र नंबर एक था, जो ऐसा दिखता था—



मैंने अपनी सर्वोत्कृष्ट कृति सयानों को दिखाई और उनसे पूछा, “क्या यह चित्र देखकर डर लगता है?”

लेकिन उन्होंने कहा, “डर? टोप से कोई क्यों डरेगा?”

यह तो टोप का चित्र नहीं था। यह तो एक शाखा-अजगर का चित्र था, जो हाथी को निगलने के बाद उसे हज़म कर रहा था। क्योंकि ये सयाने उसे समझ नहीं पाए इसलिए मैंने एक दूसरा चित्र बनाया। इस बार चित्र बनाया अजगर के अंदर का, जिससे कि सयाने उसे ठीक-ठीक समझ सकें। हमेशा उन्हें सब चीज़ें समझानी पड़ती हैं। मेरा चित्र नंबर दो ऐसा था—



इसे देखकर, उन्होंने मुझे राय दी कि अजगर के चित्र को, चाहे बाहर का हो या भीतर का, एक तरफ़ रख कर मैं अपने समय का उपयोग भूगोल, इतिहास, गणित और व्याकरण समझने में करूँ। इस तरह, चित्रकार का पेशा जो सुंदर और गौरवपूर्ण हो सकता था, मैंने छह साल की उम्र में ही छोड़ दिया। मेरे चित्र नंबर एक और चित्र नंबर दो की असफलता ने मुझे निरुत्साहित कर दिया। सयाने स्वयं कुछ भी नहीं समझते और बच्चे उन्हें सब चीज़ें कहाँ तक और कब तक समझाते रहेंगे। यह बड़ी थका देने वाली बात है।

तब मैंने दूसरा पेशा चुना और हवाई जहाज़ चलाना सीखा। मैं दुनिया के सभी देशों की हवाई यात्रा कर चुका हूँ। और यह भी सच है कि भूगोल के ज्ञान से मुझे बड़ा लाभ हुआ है। एक ही नज़र में मैं चीन और एरीज़ोना का फ़र्क पहचान लेता हूँ। रात को रास्ता भूल जाने पर यह ज्ञान बहुत काम आता है।

इस जीवन में ऐसे बहुत से लोगों के साथ मेरी कई मुलाकातें हुईं जो महत्वपूर्ण बातों के बारे में सोचते हैं। सयानों के बीच मैं काफ़ी रहा हूँ। मैंने उन्हें नज़दीक से देखा है, गहराई से देखा है, परंतु उनके बारे में मेरी राय नहीं बदली।

जब कभी मुझे कोई ऐसा सयाना मिला जो विलक्षण दिखता था, मैंने उसे अपना चित्र नंबर एक दिखाया। इस चित्र को मैंने हमेशा अपने पास रखा है। मैं यह जानने की कोशिश करता था कि इस व्यक्ति में सच्ची समझ है या



नहीं। किंतु स्त्री हो या पुरुष, सब यही कहते थे— ‘यह तो टोप है।’ इसके बाद मैं कभी भी उनसे शाखा-अजगर की या जंगलों या सितारों की बात नहीं करता था। मैं उनके स्तर पर उतर जाता था। उनसे ताश, गोल्फ, राजनीति और नेकटाइयों की बात करने लगता था। इससे सयाने बड़े खुश हो जाते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि मैं बड़ा समझदार आदमी हूँ।



छह साल पहले सहारा मरुस्थल में मेरे हवाई जहाज के दुर्घटनाग्रस्त होने तक मेरा जीवन बिलकुल अकेलेपन में बीता। कोई भी ऐसा व्यक्ति साथ नहीं था जिससे मैं सचमुच बात कर सकूँ। हवाई जहाज के इंजन का कोई पुरजा टूट गया था। मेरे साथ न तो कोई मिस्त्री था और न ही कोई मुसाफिर। मैं अकेले ही इस कठिन मरम्मत के काम में लग गया। मेरे सामने यह जीवन-मरण का प्रश्न था; पीने का पानी मुश्किल से एक हफ्ते लायक था।

पहली रात तो मैं रेत पर सो गया, किसी भी बस्ती से हजार मील दूर। मैं बेड़े पर बैठे उस नाविक से भी ज्यादा अकेला पड़ गया था, जिसका जहाज बीच समुद्र में टूट गया हो। ऐसी हालत में आप मेरे अचंभे का अंदाज़ा लगा सकते हैं, जब सूर्योदय के समय मुझे एक अजीब धीमी-सी आवाज़ सुनाई पड़ी और मैं जग गया। मैंने सुना— “अगर हो सके तो कृपया मेरे लिए एक भेड़ का चित्र बना दो।”

“क्या”

“मेरे लिए एक भेड़ का चित्र बना दो।”

एकदम अचंभित हो मैं कूदकर खड़ा हो गया और आँख मलने लगा। मैंने अपने चारों तरफ़ अच्छी तरह देखा। मैंने देखा एक असाधारण नन्हा-सा व्यक्ति खड़ा हुआ बड़ी गंभीरता से मेरा निरीक्षण कर रहा है। यह है उसकी सबसे अच्छी प्रतिछवि जो मैंने बाद में बनाई; परंतु यह चित्र उसके असली स्वरूप से कहीं कम आकर्षक है।

जो भी हो, अच्छा चित्र न बना पाने के लिए मुझे दोषी नहीं ठहराया जा सकता। जब मैं छह साल का था तभी सयानों ने मुझे चित्रकारी के पेशे से





यह है उसकी सबसे अच्छी प्रतिछवि जो मैंने बाद में बनाई...

नन्हा राजकुमार : 4



निरुत्साहित कर दिया था और इसलिए मैंने अजगर के बाहर के चित्र और अजगर के भीतर के चित्र के अलावा किसी और चीज़ का चित्र बनाना नहीं सीखा।

अचंभित हो मैंने आँखें फाड़-फाड़ कर इस अचानक दिखी मूर्ति को देखा। याद है न! किसी भी बस्ती से हजार मील दूर, रेगिस्तान में, मेरे जहाज़ की दुर्घटना हुई थी। तिस पर भी मेरा यह नन्हा-सा आदमी रेगिस्तान में अनिश्चित ढंग से भटकता हो, ऐसा नहीं दिखता था और न ही थकावट से, भूख से, प्यास से या भय से मुरझाया हुआ दिखता था। उसकी किसी भी बात से यह भान नहीं होता था कि वह बालक रेगिस्तान के बीच भटक गया हो, एक ऐसी जगह जो किसी भी बस्ती से हजार मील दूर थी। आखिर, जब मैं बोल पाया तो मैंने उससे कहा—

“पर, तुम यहाँ कर क्या रहे हो?”

उत्तर में उसने धीमे स्वर से दोहराया— जैसे कि किसी बड़े महत्त्वपूर्ण विषय के बारे में बोल रहा हो—

“मेरे लिए एक भेड़ का चित्र बना दो...”

जब कोई रहस्य मन पर छा जाता है तो उसकी आज्ञा भंग करने की धृष्टता नहीं की जा सकती। किसी भी बस्ती से हजार मील दूर और मौत के खतरे में, चाहे यह बात हास्यास्पद ही लगे, पर मैंने अपनी जेब से कागज़ और कलम निकाला। किंतु तभी मुझे याद आया कि मेरा अधिकांश अध्ययन तो भूगोल, इतिहास, गणित और व्याकरण में हुआ था। तब मैंने इस छोटे-से बालक से ज़रा झुँझलाकर कहा कि मैं चित्र बनाना नहीं जानता। उसने उत्तर दिया—

“कोई बात नहीं। मेरे लिए एक भेड़ का चित्र बना दो...”

इससे पहले मैंने कभी भेड़ का चित्र नहीं बनाया था, इसलिए मैंने उसे उन दो तस्वीरों में से एक बना कर दे दी जो मैं अकसर बनाया करता था— शाखा-अजगर की, बाहर वाली। मगर मैं हैरान हो गया, जब इस नन्हे-से व्यक्ति ने उसे देखकर कहा—

“नहीं, नहीं। मुझे अजगर के भीतर हाथी नहीं चाहिए। अजगर तो बड़ा भयानक होता है और हाथी बड़ा भारी-भरकम। जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ सब चीज़ें छोटी हैं। मुझे तो भेड़ चाहिए। मेरे लिए भेड़ का चित्र बना दो।”



तो मैंने एक दूसरा चित्र बनाया।



उसने उसे ध्यान से देखा और कहा— “नहीं, यह तो बहुत कमजोर है। मुझे दूसरा बनाकर दो।”

मैंने एक और चित्र बनाया।

मेरा मित्र नम्रतापूर्वक हलके से मुसकराया। उसने कहा—

“तुम खुद ही देखो, यह तो भेड़ नहीं है, भेड़ा है। इसके तो सींग हैं...”

तब मैंने तीसरा चित्र बनाया। दूसरे चित्रों की तरह उसने इसे भी अस्वीकार कर दिया।



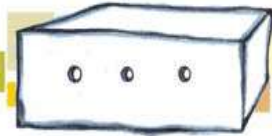
“यह तो बहुत बूढ़ी है। मुझे तो ऐसी भेड़ चाहिए जो बहुत दिन जिए।”



तब तक मेरा सब्र खत्म हो चुका था; क्योंकि मुझे अपने इंजन को खोलने की जल्दी थी। इसलिए मैंने यह चित्र घसीट दिया और साथ-साथ उसे समझा भी दिया—

“यह तो केवल उसका डब्बा है। जो भेड़ तुम्हें चाहिए वह इसके अंदर है।”

इस नन्हे समीक्षक के चेहरे पर एक प्रकाश देखकर मुझे ताज्जुब हुआ।



“यही तो चाहिए था मुझे। तुम क्या सोचते हो, इस भेड़ को बहुत सारी घास देनी पड़ेगी?”

“क्यों?”

“क्योंकि जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ हर चीज़ बहुत छोटी है...”

मैंने कहा— “हाँ! उसके लिए वहाँ की घास काफी होगी। जो भेड़ मैंने तुम्हें दी है, वह भी तो बहुत छोटी है।”

उसने झुककर चित्र को देखा— “उतनी छोटी नहीं है— देखो! वह सो गई...”

इस तरह नन्हे राजकुमार के साथ मेरी जानपहचान हो गई।



मुझे यह जानने में बहुत समय लगा कि वह कहाँ से आया था। नन्हा राजकुमार मुझसे तो बहुत प्रश्न पूछता था, मगर मेरे प्रश्नों को वह सुनता है, ऐसा कभी नहीं लगा। मुझे तो सब बातें उन शब्दों से ही पता चलीं जो कभी-कभी उसके मुँह से अचानक निकल जाया करते थे। मेरे हवाई जहाज़ को (जिसका चित्र मैं नहीं बनाऊँगा, क्योंकि वह मेरे लिए बड़ा जटिल होगा) जब उसने पहली बार देखा तो मुझसे पूछा था— “यह क्या चीज़ है?”

“यह कोई ‘चीज़’ नहीं है। यह उड़ता है। यह हवाई जहाज़ है। यह मेरा हवाई जहाज़ है।”

मुझे उसे यह बताकर बड़ा गर्व हुआ था कि मैं उड़ सकता हूँ।

तब उसने चिल्लाकर कहा— “क्या! तुम आकाश से गिर पड़े थे?”

मैंने नम्रतापूर्वक कहा— “हाँ।”

“अरे! बड़ी अजीब बात है...” बोलकर नन्हे राजकुमार के मुँह से एक मधुर हँसी फूट पड़ी। यह देखकर मैं खूब झुंझला गया, क्योंकि मैं तो चाहता था कि मेरे दुर्भाग्य को गंभीरतापूर्वक समझा जाए। तब उसने कहा— “तो तुम भी आकाश से आए हो। कौन-सा ग्रह है तुम्हारा?”

उसी क्षण मुझे उसकी उपस्थिति के अभेद्य रहस्य के प्रकाश की एक किरण दिखाई दी और मैंने सहसा पूछा— “क्या तुम दूसरे ग्रह में रहते हो?”



किंतु उसने उत्तर नहीं दिया। मेरे हवाई जहाज से उसने अपनी नज़र नहीं हटाई, केवल धीरे-से सिर हिलाया।

“इस पर तुम बहुत दूर से नहीं आ सकते थे। है न?...”

और तब वह बहुत देर तक किसी स्वप्नलोक में डूबा रहा। उसके बाद उसने अपनी जेब से मेरी दी हुई भेड़ निकाली और अपनी इस संपदा के ध्यान में खो गया।

यह जो ‘दूसरे ग्रह’ के बारे में आधा रहस्य खुला, आप समझ सकते हैं उससे मेरा कौतूहल कितना जगा होगा। इसलिए इस विषय के बारे में और अधिक जानने की मैंने बड़ी कोशिश की।

“मेरे नन्हे दोस्त, तुम कहाँ से आए हो? तुमने जो कहा— ‘जहाँ मैं रहता हूँ,’ वह कहाँ है? अपनी इस भेड़ को तुम कहाँ ले जाना चाहते हो?”

मौन रहकर कुछ सोचने के बाद उसने उत्तर दिया— “यह जो डिब्बा तुमने मुझे दिया है, इसकी अच्छी बात यह है कि वह रात को इसे अपना घर भी बना सकती है।”

“बिल्कुल ठीक। अगर तुम संतुष्ट हो तो मैं तुम्हें एक रस्सी और खूँटा भी दूँगा, जिससे तुम उसे दिन में बाँध सको।”

किंतु नन्हे राजकुमार को यह सुनकर धक्का-सा लगा— “उसको बाँधूँ? क्या अजीब ख्याल है।”

मैंने कहा— “अगर तुम उसे बाँधोगे नहीं, तो वह इधर-उधर चली जाएगी और खो जाएगी!”

मेरे दोस्त की हँसी फिर से फूट पड़ी— “पर तुम क्या सोचते हो, वह कहाँ जाएगी?”

“कहीं भी। जिधर वह निकल पड़े...”

तब नन्हा राजकुमार गंभीरतापूर्वक बोला— “उसकी परवाह नहीं। जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ सब कुछ बहुत छोटा है।” और शायद कुछ उदास भाव से उसने कहा— “वहाँ कोई भी अधिक दूर नहीं जा सकता!”



इस तरह मुझे एक दूसरी महत्वपूर्ण जानकारी मिली। वह यह कि जिस ग्रह से नन्हा राजकुमार आया था, वह मुश्किल से एक घर से बड़ा होगा।

किंतु इससे मुझे ज्यादा अचंभा नहीं हुआ। मैं अच्छी तरह जानता था कि हमने बड़े ग्रहों को तो नाम दिया है, जैसे— पृथ्वी, बृहस्पति, मंगल, शुक्र। किंतु और भी सैंकड़ों ग्रह हैं। उनमें से कुछ तो इतने छोटे हैं, कि उन्हें दूरबीन

से देखना भी कठिन हो जाता है। जब कोई ज्योतिर्विद् ऐसे किसी ग्रह की खोज करता है, तो वह उसे नाम नहीं देता, बल्कि एक नंबर दे देता है।

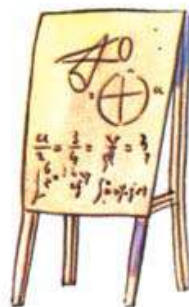
उदाहरणार्थ— “लघुग्रह 325”।

कुछ गंभीर कारणों से मेरा विश्वास है कि जिस लघुग्रह से नन्हा राजकुमार आया था, वह है बी-612। एक तुर्की ज्योतिर्विद् ने 1909 में इसे पहली बार दूरबीन से देखा था। यह केवल एक ही बार दिखाई दिया था। अपने इस शोध को उसने अंतर्राष्ट्रीय खगोल

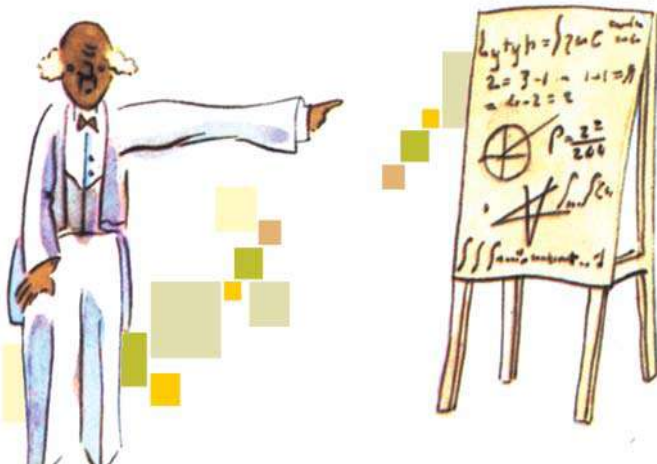
शास्त्र के सम्मेलन के एक विराट आयोजन में पेश किया था। पर वह था तुर्की पोशाक में, इसलिए किसी ने भी उसकी बात का विश्वास नहीं किया।

ऐसे ही होते हैं सयाने...

यह लघुग्रह बी-612 का सौभाग्य था कि तुर्की के एक डिक्टेटर ने अपने राज्य में हुक्म लागू कर दिया कि उसकी प्रजा यूरोपियन पोशाक पहना करे,



नहीं तो मौत की सजा दी जाएगी। तब उस ज्योतिर्विद् ने सन् 1920 में फिर से अपना शोध प्रभावशाली और शानदार पोशाक में प्रस्तुत किया। इस बार सबने उस पर विश्वास किया।



इस लघुग्रह बी-612 का नंबर और विस्तृत ब्यौरा जो मैंने आपके सामने रखा, वह केवल सयानों के और उनके स्वभाव के कारण ही, क्योंकि सयाने अंकों से प्रेम करते हैं। जब आप उनसे कहें कि आपको एक नया दोस्त मिला है, तो वे उसके बारे में आवश्यक बातें नहीं पूछते। यह नहीं पूछते— “उसकी आवाज़ कैसी है?”, “वह कौन-से खेल अधिक पसंद करता है?” “क्या वह तितलियाँ संग्रह करता है?” उसके बदले वे जानना चाहते हैं— “उसकी उम्र कितनी है?” “उसके कितने भाई हैं?” “उसका वजन कितना है?” “उसका पिता कितना कमाता है?” इन अंकों से ही वे समझते हैं कि उस व्यक्ति के बारे में सब कुछ जान लिया।

अगर आप सयानों से कहें— “मैंने एक बहुत सुंदर घर देखा है, गुलाबी ईंटों का बना हुआ। फूलों से भरी खिड़कियाँ और छत पर कबूतर...” उन्हें ऐसे घर के बारे में कुछ भी कल्पना नहीं होगी। आपको उनसे कहना पड़ेगा— “मैंने एक घर देखा है, जिसकी कीमत 20,00,000 रुपये है।” तो वे उछल पड़ेंगे— “ओह, कितना सुंदर घर है!”

ऐसे ही आप उनसे कह सकते हैं— “नन्हा राजकुमार है, इसका प्रमाण यही है कि वह प्यारा है, वह हँसता है और इसलिए कि वह एक भेड़ की खोज में है। जब कोई भेड़ चाहता है, तो वही है उसके अस्तित्व का प्रमाण।” पर सयानों को यह सब बताने से क्या लाभ? यह सुनकर वे अपनी नाक





नन्हा राजकुमार लघुग्रह बी-612 पर

नन्हा राजकुमार : 11



सिकोड़ लेंगे और आपको बचकाना समझेंगे। किंतु अगर आप उनसे यह कहें— “नन्हा राजकुमार लघुग्रह बी-612 का रहने वाला है”, तो उन्हें विश्वास हो जाएगा और आप उनके प्रश्नों से बच जाएँगे। सयाने ऐसे ही होते हैं। उनके खिलाफ कुछ कहने की क्या ज़रूरत। बच्चों को तो सयानों के प्रति बड़ी सहिष्णुता बरतनी चाहिए।

पर हम, जो जीवन को समझते हैं, उनके लिए तो अंक अवश्य ही महत्वहीन बात हैं। मुझे चाहिए था कि इस कहानी को परियों की कथा की भांति प्रारंभ करता। मुझे कहना चाहिए था— “बहुत दिनों की बात है। एक नन्हा राजकुमार था। वह रहता था एक ग्रह पर। वह ग्रह राजकुमार के शरीर से अधिक बड़ा नहीं था और उस राजकुमार को चाहिए था एक दोस्त...” जो जीवन को समझते हैं उनको तो मेरी कहानी से सच्चाई का और अधिक आभास होता।

पर सच यह है कि मैं यह नहीं चाहता कि कोई मेरी पुस्तक लापरवाही से पढ़े। इन स्मृतियों को लिखने में मैंने काफ़ी दुख सहन किया है। मेरे मित्र को अपनी भेड़ लेकर मुझसे दूर गए छह साल तो बीत ही गए हैं। अगर मैं उसका वर्णन यहाँ करना चाहता हूँ तो केवल इसीलिए कि मैं उसे भूल न जाऊँ। किसी मित्र को भूलना दुखद होता है। मित्र हरेक को नहीं मिलता। अगर मैं उसे भूल जाऊँ तो मैं सयानों जैसा ही हो जाऊँगा। उन जैसा, जिनकी रुचि केवल अंकों में ही होती है।

इसी काम के लिए मैंने फिर-से एक रंग का डिब्बा और पेंसिलें खरीदीं। मेरी उम्र में फिर-से चित्रकारी करना बड़ा कठिन है और वह भी तब, जब मैंने छह साल की उम्र में शाखा-अजगर का चित्र भीतर और बाहर से बनाने के बाद और कोई चित्र नहीं बनाया। मैं यह प्रयत्न जरूर करूँगा कि जितना संभव हो, मेरे चित्र दिखने में प्रकृति जैसे सच्चे लगें। पर मुझे यह विश्वास नहीं है कि सफलता मिलेगी ही। कोई चित्र तो ठीक हो जाता है पर दूसरा वैसा बिल्कुल भी नहीं दिखता। नन्हे राजकुमार की ऊँचाई दिखाने में भी मैं गलती कर बैठता हूँ, कभी-कभी उसे अधिक लंबा बना देता हूँ और कभी-कभी अधिक छोटा। उसकी पोशाक के रंग के बारे में भी शंका होती



है। अच्छे-से-अच्छा, जैसा होता है, प्रयत्न करता हूँ; कभी अच्छा तो कभी खराब, पर उम्मीद है कि आमतौर पर साधारण अच्छा हो जाता है।

कई अधिक महत्वपूर्ण बारीकियों को बनाने में भी गलती कर देता हूँ। पर वह मेरा कसूर नहीं है। मेरे मित्र ने मुझे कभी कुछ भी नहीं समझाया। उसने शायद यह सोचा होगा कि मैं भी उसी जैसा हूँ। किंतु दुख की बात है कि मैं डिब्बे की दीवारों में से भेड़ देखना नहीं जानता। शायद मैं भी कुछ सयानों जैसा ही हूँ। मुझे वयस्क होना पड़ेगा।



जैसे-जैसे एक-एक दिन बीतता, मैं नन्हे राजकुमार के ग्रह के बारे में बातचीत के दौरान कुछ-न-कुछ जान लेता, उसके ग्रह छोड़ने के बारे में और उसके भ्रमणों के बारे में। जानकारी धीरे-धीरे ऐसे मिलती थी, जैसे कि उसके विचारों में से अचानक टपक पड़ी हो। गोरक्षी की बात इसी तरह, तीसरे दिन, मैंने सुनी थी।

इस बार भी इसके लिए मैं भेड़ का ही कृतज्ञ हूँ। नन्हे राजकुमार ने शंका भरे भाव से मुझसे सहसा पूछा— “क्या यह सच है कि भेड़ छोटी झाड़ियाँ खाती हैं?”

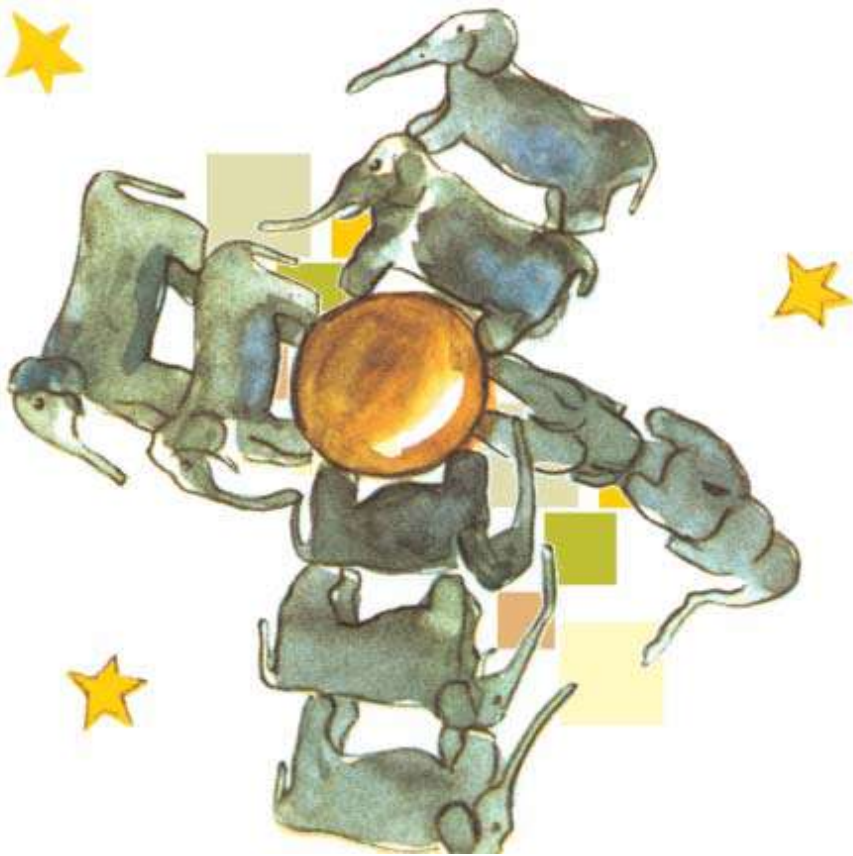
“हाँ। यह सच है।”

“अच्छा। तब तो बड़ी खुशी की बात है।”

मैं नहीं समझ पाया कि इस बात का क्या महत्त्व था कि भेड़ छोटी झाड़ियाँ खाती हैं। किंतु नन्हे राजकुमार ने कहा— “तो इसका अर्थ यह हुआ कि वे गोरक्षी भी खाती हैं?”

मैंने नन्हे राजकुमार का ध्यान इस बात पर खींचा कि गोरक्षी छोटी झाड़ी नहीं होती, बल्कि वह तो किलों के समान बड़ा वृक्ष होता है। और अगर वह अपने साथ हाथियों का पूरा झुंड भी ले जाएँ, तो भी वे एक गोरक्षी को खाकर समाप्त नहीं कर पाएँगे।





हाथियों के झुंड की बात सुनकर नन्हे राजकुमार को हँसी आ गई।
उसने कहा— “हमें तो उन सबको एक के ऊपर एक करके रखना पड़ेगा।”

पर उसने एक अक्ल की बात कही— “उतना बड़ा होने से पहले गोरक्षी शुरू में तो छोटे ही रहते हैं।”

मैंने कहा, “बिलकुल ठीक! पर तुम क्यों चाहते हो कि भेड़ छोटी-छोटी गोरक्षी खाए?”

उसने फौरन उत्तर दिया, “अरे। जाने दो!” ऐसा लगता था कि जैसे वह कोई स्वयं-सिद्ध बात कह रहा हो। मुझे इस समस्या का हल करने के लिए बहुत बुद्धि लगानी पड़ी और वह भी बिना किसी मदद के।

मुझे पता चला कि राजकुमार के ग्रह पर भी, जैसा कि हर ग्रह पर होता है— अच्छे और बुरे, दोनों तरह के पौधे होते हैं। उसका नतीजा यह होता है



कि अच्छे पेड़ों से अच्छे बीजों की उत्पत्ति होती है और बुरे पेड़ से बुरे बीजों की। परंतु बीज दिखाई नहीं देते। धरती के अंधकार की गहराई में वे तब तक सोते रहते हैं जब तक उनमें से किसी एक को जगने की इच्छा हो जाती है। तब यह छोटा-सा बीज अपने आप को फैलाता है, पहले संकोच के साथ एक मनोहर छोटी-सी कोंपल को अनाक्रमित भाव से ऊपर सूर्य की तरफ उठाता हुआ। अगर वह मूली का अंकुर हो या गुलाब की कोंपल, तो उसे जहाँ वह चाहे उगने देना चाहिए। परंतु अगर वह बुरा पौधा है तो पहचान में आते ही, जितना शीघ्र संभव हो, नष्ट कर देना चाहिए।

जो ग्रह नन्हे राजकुमार का घर था, उस पर कुछ भयानक बीज थे। वे थे— गोरक्षी के बीज। उस ग्रह की मिट्टी पर इनका हमला हो गया था। अगर ध्यान देने में देरी हो जाए तो गोरक्षी ऐसी चीज़ है जिससे आप कभी भी छुटकारा नहीं पा सकते। वह सारे ग्रह के ऊपर छा जाती है। उसकी जड़ें मिट्टी को छेदती हुई धरती के अंदर घुस जाती हैं। और अगर ग्रह बहुत छोटा हुआ और गोरक्षी संख्या में अधिक, तो उसे टुकड़ों में चूर-चूर कर देती हैं।





गोरक्षी



बाद में नन्हे राजकुमार ने मुझे बताया— “यह एक अनुशासन का प्रश्न है। जब आपने प्रातः अपना शौचादि और नित्यकर्म पूरा कर लिया तो अपने ग्रह की साफसफाई करने का समय होता है, वह अधिक-से-अधिक ध्यानपूर्वक करनी चाहिए। यह देखना ही चाहिए कि जैसे ही वे गुलाब की कोंपलों से अलग दिखाई दें, वैसे ही गोरक्षी रोज उखाड़ कर फेंक देनी चाहिए। क्योंकि शुरू-शुरू में गोरक्षी गुलाब के पौधे जैसी ही दिखती है। यह उकता देने वाला काम है, पर है बड़ा आसान।”

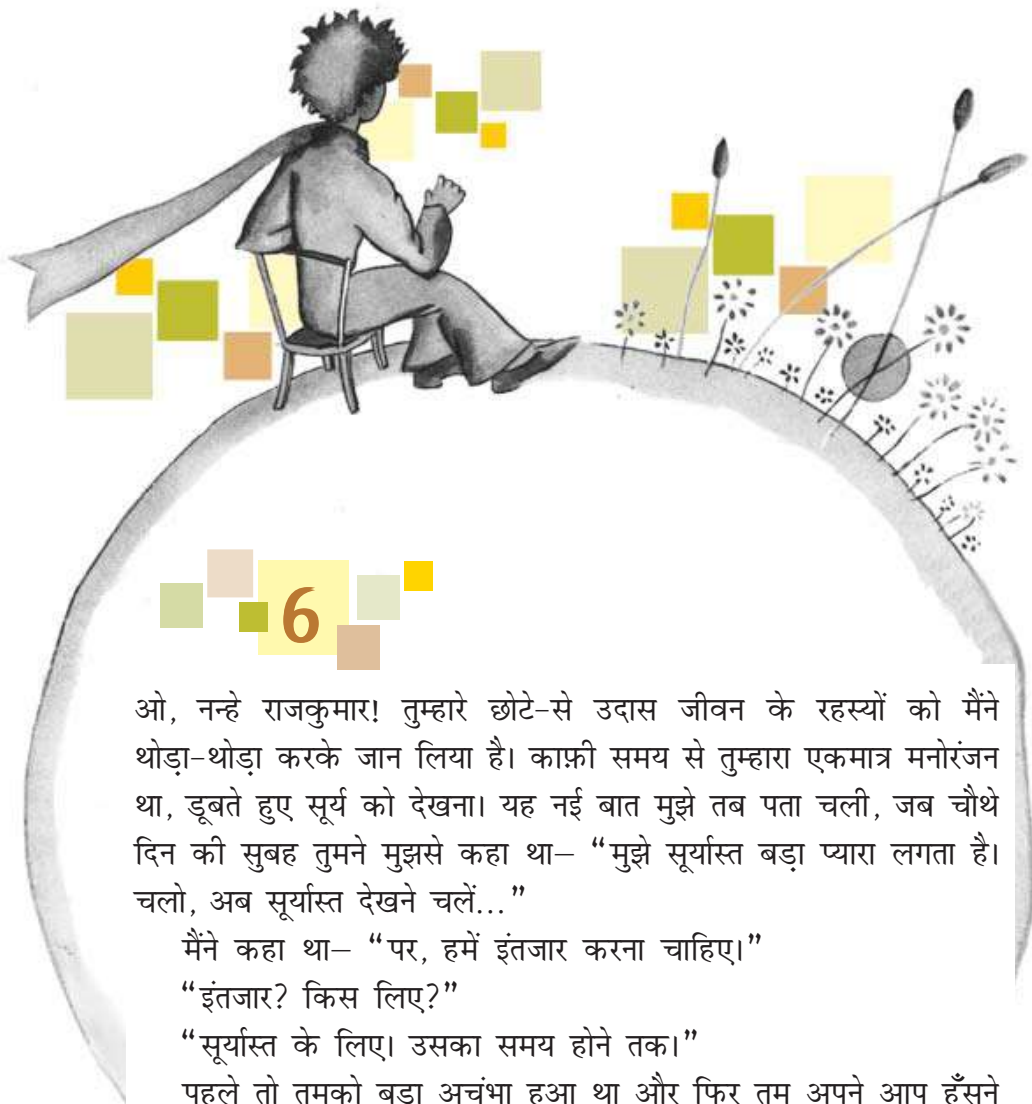
एक दिन उसने मुझसे कहा— “तुम्हें एक दिन इसका सुंदर चित्र बनाना चाहिए, जिससे कि तुम्हारे ग्रह के बच्चे यह सब ठीक-ठीक देख सकें। अगर कभी वे भ्रमण करेंगे तो इससे उन्हें बड़ा लाभ होगा।” उसने फिर कहा— “कभी-कभी किसी काम को अगले दिन के लिए टाल देने में नुकसान नहीं होता। किंतु अगर वह गोरक्षी है तो उसका अर्थ होगा— भयानक विपत्ति। मैं एक ग्रह को जानता था, उस पर एक आलसी आदमी रहता था। उसने तीन छोटी-छोटी झाड़ियाँ छोड़ दी थीं...”

जैसा वर्णन नन्हे राजकुमार ने उसका किया, मैंने उस ग्रह का एक चित्र बनाया। मैं सीख देने वाला नहीं बनना चाहता। किंतु गोरक्षी के खतरे के बारे में लोग इतना कम समझते हैं कि अगर कोई किसी लघुग्रह पर खो जाए तो बड़ा खतरा मोल ले सकता है। इसलिए मैं एक बार को अपना संकोच छोड़ रहा हूँ। मैं साफ़-साफ़ कहता हूँ— “बच्चो, गोरक्षी की तरफ़ नज़र रखो।”

मेरे मित्र, मेरी तरह ही इस खतरे को अरसे से अनजाने में टालते आ रहे हैं। और उन्हीं के लिए मैंने इस चित्र को बनाने में इतनी मेहनत की है। इसके ज़रिए जो पाठ मैं पढ़ा रहा हूँ, उसका मूल्य उस मेहनत के योग्य है, जो मुझे इसे बनाने में लगी।

आप शायद यह पूछेंगे कि इस पुस्तक में गोरक्षी के चित्र के समान शानदार और प्रभावशाली अन्य चित्र क्यों नहीं हैं? सीधी-सी बात है। मैंने प्रयत्न तो किया, किंतु अन्य में उतना सफल नहीं हो पाया। जब मैंने गोरक्षी का यह चित्र बनाया था, तब अति आवश्यक स्थिति की प्रेरक शक्ति के कारण मैं अपनेआप को भूल ही गया था और इसीलिए यह चित्र इतना अच्छा बन गया।





ओ, नन्हे राजकुमार! तुम्हारे छोटे-से उदास जीवन के रहस्यों को मैंने थोड़ा-थोड़ा करके जान लिया है। काफ़ी समय से तुम्हारा एकमात्र मनोरंजन था, डूबते हुए सूर्य को देखना। यह नई बात मुझे तब पता चली, जब चौथे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा था— “मुझे सूर्यास्त बड़ा प्यारा लगता है। चलो, अब सूर्यास्त देखने चलें...”

मैंने कहा था— “पर, हमें इंतजार करना चाहिए।”

“इंतजार? किस लिए?”

“सूर्यास्त के लिए। उसका समय होने तक।”

पहले तो तुमको बड़ा अचंभा हुआ था और फिर तुम अपने आप हँसने लगे थे। तुमने मुझसे कहा था— “मुझे हमेशा ऐसा ही लगता है कि मैं अपने घर में ही हूँ।”

ठीक ही तो है। सभी जानते हैं कि जब अमेरिका में दोपहर होती है फ्रांस में तब सूर्यास्त हो रहा होता है। अगर तुम एक मिनट भर में फ्रांस पहुँच पाते तो उसी समय सूर्यास्त देख पाते। दुर्भाग्य से फ्रांस अमेरिका से बहुत दूर है। किंतु प्यारे नन्हे राजकुमार, तुम्हारे नन्हे से ग्रह पर तो कुर्सी को उठाकर कुछ कदम दूर रखने से ही काम चल जाएगा। जब भी चाहो तुम सांध्य प्रकाश को देख सकते हो...



“एक दिन मैंने सूर्यास्त चवालीस बार देखा था!” और उसी के बाद कहा था, “जब कोई उदास होता है तो सूर्यास्त और भी प्यारा लगता है...”

मैंने पूछा था— “तो, क्या चवालीस बार सूर्यास्त देखने वाले दिन तुम उदास थे?”

किंतु नन्हे राजकुमार ने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।



मैं भेड़ का बड़ा कृतज्ञ हूँ। पाँचवें दिन भी उसी के कारण नन्हे राजकुमार के जीवन का एक और रहस्य मेरे सामने प्रकट हुआ। जैसे कि अपनी समस्या पर काफ़ी देर से मौन-मनन कर रहा हो, बिना किसी प्रसंग के वह बोल उठा—

“भेड़ अगर छोटी झाड़ियाँ खाती है, तो क्या फूल भी खाती है?”

“भेड़! वह तो, जो कुछ भी उसकी पहुँच में होगा, सब खा जाती है।”

“जिन फूलों में काँटे होते हैं, उन्हें भी?”

“हाँ। उन्हें भी।”

“तो फिर काँटों से लाभ क्या?”

मैं नहीं जानता था और उस समय तो मैं अपने इंजन के एक पेंच को, जो जम गया था, खोलने में व्यस्त था। मैं गहरी परेशानी में था, मैं देख रहा था कि मेरे हवाई जहाज़ का बिगड़ना बहुत गंभीर ढंग का है। और मेरे पास पीने का पानी इतना कम था कि मुझे डर लगने लगा।

उसने फिर कहा— “काँटे क्यों होते हैं?”

नन्हा राजकुमार अपने प्रश्न को पूछकर यूँ ही नहीं छोड़ देता था। और मैं तो इस पेंच के पीछे परेशान था। जो मन में आया उत्तर मैं वही कह दिया—

“काँटों का कोई उपयोग नहीं। काँटों की सहायता से फूल केवल अपनी अक्षमता को प्रकट करते हैं।”

“अच्छा!” क्षण भर दोनों मौन रहे। पर उसके बाद नन्हे राजकुमार ने आपत्तिसूचक भाव से कहा— “मैं तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं करता।



फूल तो बड़े कमजोर होते हैं। वे बड़े सरल होते हैं। वे अपना बचाव, जैसे भी हो, कर सकते हैं। उन्हें ऐसा विश्वास है कि काँटे उनके भयानक शस्त्र होते हैं।”

मैंने उत्तर नहीं दिया। उस क्षण मैं मन-ही-मन कह रहा था कि अगर, यह पेंच नहीं घूमा, तो मैं इसे हथौड़े से ठोक कर निकालूँगा। नन्हे राजकुमार ने फिर-से मेरे विचारों को भंग किया—

“तुम सचमुच विश्वास करते हो कि फूल...”

मैंने चिल्लाकर कहा, “अरे नहीं, नहीं। मैं कुछ भी विश्वास नहीं करता।” मुझे तुरंत जो पहली बात सूझी मैंने वही कह दी— “देखते नहीं, मैं महत्वपूर्ण काम में कितना व्यस्त हूँ।”

वह अचंभित होकर मेरी तरफ़ ताकता रहा।

“महत्वपूर्ण काम!”

उसने मुझे गौर से देखा। मेरी उंगलियाँ इंजन की ग्रीज़ से काली हो गई थीं। मैं हाथ में हथौड़ा लिए अपने इंजन पर झुका हुआ था, जिस इंजन को वह अत्यंत गंदी चीज़ मानता था।

उसने कहा— “तुम बिलकुल सयानों की तरह बात करते हो!”

यह सुनकर मुझे कुछ शर्मिंदगी हुई। उसने अपने सुनहरे बाल हवा में झटके। उसे थोड़ा क्रोध आ गया था और वह कठोरता के साथ बोलता गया— “तुम बातों को मिला देते हो, उन्हें धुंधला बना देते हो। मैं एक ग्रह को जानता हूँ, जहाँ एक आदमी रहता है, लाल चेहरे वाला। उसने कभी कोई फूल नहीं सूँघा। कभी कोई सितारा नहीं देखा। कभी किसी को प्यार नहीं किया। उसने अपने जीवन में अंक जोड़ने के सिवाए कभी कुछ नहीं किया। दिन भर तुम्हारी तरह ही कहता रहता है— ‘मैं बहुत गंभीर व्यक्ति हूँ।’ और इससे वह गर्व से फूला नहीं समाता। परंतु वह मनुष्य नहीं है, वह तो मेंढक की छतरी है।”

“क्या है?”

“मेंढक की छतरी।”

नन्हा राजकुमार क्रोध से लाल हो गया था। वह कहने लगा— “फूलों पर काँटे लाखों वर्षों से उगते आए हैं। लाखों वर्षों से ही भेड़ भी उन्हें खाती आई



है। और क्या यह बात समझना महत्वपूर्ण नहीं है कि फूल, जिनके लिए काँटों का कोई उपयोग नहीं है, अपने ऊपर उन्हें उगाने का इतना कष्ट क्यों करते हैं? भेड़ और फूलों के बीच का युद्ध क्या महत्वपूर्ण नहीं है? क्या यह उस मोटे लाल मुँह वाले आदमी के अंकों से अधिक महत्व का नहीं है? जानता हूँ— एक निराला फूल है, जो और कहीं नहीं बल्कि केवल मेरे ग्रह पर ही उगता है। उसे एक छोटी-सी भेड़ किसी एक सुबह बिना सोचे-समझे मुँह के एक झटके से ही बरबाद कर सकती है और तुम सोचते हो कि वह महत्वपूर्ण नहीं है?”

उसका चेहरा क्रोध से और भी लाल हो गया और वह कहता गया—

“अगर कोई व्यक्ति किसी ऐसे फूल को प्यार करता है, जो लाखों करोड़ों सितारों में केवल एक ही पर खिलता है, तो उसके आनंद के लिए इतना ही काफ़ी है कि वह सब सितारों को निहारे और मन-ही-मन सोचे कि कहीं एक सितारे पर मेरा फूल खिला है... पर, अगर उसे भेड़ खा ले तो एक ही क्षण में उसके लिए सभी सितारे आँखें मूँद लेंगे... और तुम सोचते हो कि वह महत्वपूर्ण नहीं है!”

नन्हा राजकुमार और कुछ न कह पाया। उसका कंठ अवरुद्ध हो गया।

रात हो चली थी। मेरे हाथों से औजार छूट गए थे। क्या रखा है मेरे इस हथौड़े में, इस पेंच में, प्यास में या मृत्यु में? एक सितारे पर, एक ग्रह पर, मेरे इस ग्रह पर, पृथ्वी पर, एक नन्हा



राजकुमार खड़ा था, जिसे सांत्वना देनी थी। मैंने उसे अपनी गोद में उठाया, उसे दुलार किया और कहा— “तुम जिस फूल को प्यार करते हो, उसे कोई खतरा नहीं है। मैं तुम्हारी भेड़ के लिए मोहरा का चित्र बना दूँगा और फूल के चारों तरफ़ लगाने के लिए एक बाड़ा और मैं...”

उससे क्या कहूँ, मैं नहीं जानता था। मैं अजीब महसूस कर रहा था। कुछ विभ्रान्त-सा हो गया था। मैं नहीं जानता था कि फिर-से उसके निकट कैसे आऊँ, कैसे उसके साथ मिल सकूँ, और कहाँ आगे बढ़कर उसके साथ हाथ-में-हाथ मिलाकर एक बार फिर चल सकूँ। बड़ा रहस्यमय होता है यह आँसुओं का जगत्।



इस फूल के बारे में मैंने शीघ्र ही और अच्छी तरह जान लिया। नन्हे राजकुमार के ग्रह पर फूल हमेशा सरल आकार के होते थे। वे इकहरी पँखुड़ियों वाले होते थे और जगह भी न के समान लेते थे। उनसे किसी को कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। सुबह घास में खिलते थे और शांत हो रात तक मुरझा जाते थे। किंतु एक दिन न जाने कहाँ से उड़कर एक बीज आया, जिससे एक नया फूल खिला। नन्हे राजकुमार ने ध्यानपूर्वक इसका निरीक्षण किया। उसके ग्रह पर ऐसी कोंपल और कहीं नहीं थी। यह भी हो सकता था कि वह एक नए प्रकार की गोरक्षी हो।

किंतु यह झाड़ी अधिक बड़ी नहीं हुई। वह एक फूल खिलाने की तैयारी करने लगी। जब एक बड़ी कली निकली, तब राजकुमार वहाँ था। उसने सोचा कि इसमें से जरूर कुछ चमत्कार दिखेगा। किंतु फूल को अपने हरे घर



की छाया में अपनी सुंदरता के लिए किए गए श्रृंगार से अभी संतोष नहीं हुआ था। बड़े ध्यान से उसने अपने रंग चुने थे। धीरे-धीरे वेषभूषा धारण की थी, एक-एक करके पँखुड़ियाँ सजाई थीं। जंगली फूलों की तरह वह संसार में बिना सजे-धजे नहीं आना चाहता था। अपनी सुंदरता की पूरी चमक के साथ ही वह प्रकट होना चाहता था। हाँ! सचमुच वह बड़ा नखरे वाला फूल था। उसकी रहस्यमय सजावट कई दिनों तक चलती रही।

एक दिन ठीक सूर्योदय के समय वह दिखाई दिया।

इतनी बारीकी से, इतनी मेहनत करने के बाद उसने अँगड़ाई ली, और कहा— “मुझे क्षमा करना, अभी तक मेरी नींद पूरी-पूरी नहीं खुली है। मेरी पँखुड़ियाँ अभी तक ठीक तरह से नहीं सजीं...”

किंतु नन्हा राजकुमार अपने-आप को रोक न सका। उसने प्रशंसा करते हुए कहा— “ओह! तुम कितने सुंदर हो!”

फूल ने मधुरतापूर्वक उत्तर दिया— “हूँ न, सुंदर। देखो, मेरा जन्म भी तो ठीक सूर्य के जन्म के साथ ही हुआ...”

नन्हा राजकुमार आसानी से समझ गया कि यह फूल इतना विनम्र भी नहीं है, किंतु कितना सुंदर है, कितना भावनाप्रद।

क्षण भर बाद ही फूल ने कहा— “नाशते का समय हो गया न। क्या, मेरी आवश्यकता के बारे में कृपया कुछ कर सकते हो।”

नन्हा राजकुमार शरमा गया। वह ताजे पानी का झरना लेने चला गया। और इस तरह उसने फूल की देखभाल की।

फूल शीघ्र ही अपने गर्व के कारण राजकुमार को सताने लगा। अगर सच कहा जाए तो नन्हे राजकुमार

के लिए वह अनुभव सचमुच विचित्र था। उदाहरणार्थ— एक दिन वह अपने चार काँटों के बारे में राजकुमार को कहने लगा— “आए तो ज़रा बाघ, अपने पंजों को लेकर!”



नन्हे राजकुमार ने आपत्ति करते हुए कहा— “मेरे ग्रह पर बाघ नहीं है। और बाघ तो घास नहीं खाते।”

फूल ने मीठी आवाज़ में कहा— “मैं तो घास नहीं हूँ।”

राजकुमार ने क्षमा माँगी, क्योंकि उसने फूल को घास कह दिया था। फूल ने कहा— “मैं बाघ से नहीं डरता, किंतु मुझे तेज़ हवा के झोंके का डर है। तुम्हारे पास कोई परदा है, मेरे लिए?”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “तेज़ हवा का डर तो पौधे के लिए दुर्भाग्य की बात होती है।” और मन-ही-मन कहा— “बड़े जटिल स्वभाव वाला है यह फूल...”

फूल ने कहा— “रात को मुझे काँच के ग्लोब से ढक देना, क्योंकि तुम्हारे यहाँ बड़ी ठंड है। मैं जहाँ से आया हूँ वहाँ...”

इतना कहकर वह स्वयं रुक गया। वह तो बीज के रूप में आया था।

उसे दूसरे जगत की बातें कैसे मालूम हो सकती थीं। ऐसे साफ़ झूठ बोलते हुए पकड़े जाने पर स्वयं लज्जित होकर फूल ने नन्हे राजकुमार को गलत सिद्ध करने के लिए दो-तीन बार खाँसा और कहा— “परदा कहाँ है?”

राजकुमार ने कहा— “मैं तो परदा लेने जा ही रहा था, पर तुमने बोलना शुरू कर दिया...”

फूल ने और ज़ोर से खाँसना

शुरू किया, जिससे कि राजकुमार को पश्चाताप हो। उसे ऐसा लगे कि हवा से फूल को कष्ट हो रहा है और उसने अभी तक उसे परदा क्यों नहीं दिया।



इस प्रकार नन्हा राजकुमार, प्रेम और सद्भाव होते हुए भी फूल पर शंका करने लगा। जिन शब्दों का कोई महत्त्व नहीं था, उसने उन्हें भी गंभीरतापूर्वक लिया था, जिसके कारण उसे बहुत दुःख हुआ।

एक दिन उसने मुझे अपने मन की बात बताई—
“मुझे उसकी बात सुननी नहीं चाहिए थी। फूलों की बात तो कभी किसी को नहीं सुननी चाहिए। उनकी तो केवल सुगंध ही लेनी चाहिए और उन्हें निहारना चाहिए। मेरा फूल तो मेरे सारे ग्रह को सुगंधित कर देता है। पर मुझे नहीं मालूम था कि उसका आनंद मैं कैसे लूँ। उसकी पंजों वाली बात से तो मेरी मृदुता और दया को ही जागना चाहिए था, पर उसने तो मुझे रुष्ट कर दिया था।”

इस प्रकार वह अपने मन की और भी बातें कहता गया— “सत्य तो यह है कि मैं चीजों को समझना ही नहीं जानता था। मुझे तो उसे उसके काम से समझना चाहिए था, वाणी से नहीं। उसने मुझ पर अपनी छटा बरसाई थी, अपनी सुगंध फैलाई थी। मुझे उसके पास से भागना नहीं चाहिए था। उसके अजीबोगरीब पैतरों के पीछे तो स्नेह छिपा था, मुझे वह पहचानना चाहिए था। फूल कहते कुछ हैं लेकिन उनका आशय कुछ और ही होता है। किंतु तब मैं बहुत छोटा था और नहीं जानता था कि उसे कैसे प्यार करना चाहिए।”



मेरा ख्याल है कि उसने अपने ग्रह से भाग आने के लिए देशांतरण करने वाले जंगली पक्षियों के झुंड से लाभ उठाया होगा। जिस दिन वह निकला, उस सुबह उसने अपने ग्रह को ठीकठाक किया।

उसने अपने जीवित/सक्रिय ज्वालामुखियों को होशियारी से साफ़ किया। उसके यहाँ दो ज्वालामुखी पहाड़ थे और वे रोज़ सुबह नाश्ता गरम करने के



लिए सुविधाजनक थे। एक निर्जीव ज्वालामुखी भी उसके ग्रह पर था। उसने उसे भी साफ़ किया, जैसा कि उसने कहा था— “कौन जाने कब क्या हो जाए!” ज्वालामुखियों को अगर साफ़ रखा जाए, तो वे धीरे-धीरे जलते हैं और एकदम नहीं फूटते। ज्वालामुखी की आग घर की चिमनी की आग जैसी ही होती है।

अपनी पृथ्वी पर तो हम लोग ज्वालामुखी पहाड़ों को साफ़ करने के लिए बहुत छोटे पड़ते हैं। इसलिए उनके कारण हमें इतना दुःख भोगना पड़ता है।

नन्हे राजकुमार ने बची हुई गोरक्षी के अंकुर भी कुछ उदास भाव से उखाड़ दिए। उसका ख्याल था कि वह कभी अपने ग्रह पर लौटना नहीं चाहेगा। आखिरी सुबह को उसे ये रोज़ाना के काम बहुत अनमोल लगे। किंतु जब उसने फूल को आखिरी बार सींचा और उसे काँच के ग्लोब से ढकने लगा, तो उसकी आँखें लगभग भीग ही गईं। उसने फूल से कहा— “अलविदा!”

पर फूल ने उत्तर नहीं दिया। नन्हे राजकुमार ने फिर कहा— “अलविदा!”

फूल खाँसा, पर इसलिए नहीं कि उसे ठंड लगी थी। आखिर उसने राजकुमार से कहा— “मैं बड़ा मूर्ख हूँ, मुझे क्षमा करो। खुश रहने की कोशिश करना...”

फूल ने कुछ शिकायत नहीं की, तो राजकुमार को अचंभा हुआ। वह अचंभित होकर खड़ा रहा और काँच का ग्लोब उसके हाथ में ही था। उसे यह शांतिमय मिठास समझ में नहीं आई।

फूल ने उससे कहा— “मैं सचमुच तुम्हें प्यार करता हूँ। यह तो मेरी ही भूल है कि तुम इतने दिन यह समझ ही नहीं सके। खैर जाने दो। पर, तुम भी तो मेरे जैसे ही मूर्ख हो। खुश रहने की कोशिश करना... और रहने दो इस ग्लोब को, मुझे अब इसकी जरूरत नहीं है।”

“किंतु हवा तो तेज़ है न...”

“मुझे इतना तेज़ जुकाम नहीं पर... और रात की ठंडी हवा मेरे लिए अच्छी ही रहेगी। मैं तो फूल हूँ...”

“लेकिन जानवर...”





उसने अपने जीवित ज्वालामुखियों को होशियारी से साफ़ किया



फूल ने कहा— “अगर मुझे तितलियों से परिचय करना है, तो दो-चार इल्लियों को सहन करना ही पड़ेगा। सुना है कि तितलियाँ बड़ी सुंदर होती हैं। तितलियों और इल्लियों के अलावा आखिर मेरे पास आएगा ही कौन? तुम तो बहुत दूर चले जाओगे। जहाँ तक बड़े जानवरों की बात है, तो मैं उनसे नहीं डरता। उनके लिए मेरे पास अपने पंजे हैं ही।” और बड़ी सरलतापूर्वक उसने अपने चार काँटे दिखाए। फिर कहा— “अब देर मत करो। तुमने जाने का तय कर ही लिया है, तो अब जाओ।”

उसने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि राजकुमार उसे आँसू बहाता देखे। इतना स्वाभिमानी था वह फूल!



उसने देखा कि वह लघुग्रह 325, 326, 327, 328, 329 और 330 के पड़ोस में ही है। उसने अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए और स्वयं को व्यस्त रखने के लिए इनकी यात्रा शुरू की।

उनमें से पहले वाले लघुग्रह पर एक राजा रहता था। उसकी पोशाक थी शाही बैंगनी रंग और श्वेत पंख की। वह एक सिंहासन पर बैठा हुआ था, जो सादा परंतु आलीशान था।

जब राजा ने राजकुमार को वहाँ आते हुए देखा, तो उसने जोश के साथ कहा— “आहा! यह है मेरी एक प्रजा।”

नन्हे राजकुमार ने मन-ही-मन अपने से पूछा— “इसने मुझे कैसे पहचाना। पहले तो इसने मुझे कभी भी नहीं देखा।” उसे नहीं मालूम था कि राजाओं के लिए तो यह बात मामूली है— सभी तो उनकी प्रजा ही होते हैं।

राजा ने गर्व के साथ, यह महसूस करके कि अब वह किसी के ऊपर राज करता है, कहा— “नज़दीक आओ। जिससे कि मैं तुम्हें अच्छी तरह देख सकूँ।”

नन्हे राजकुमार ने बैठने की जगह के लिए चारों तरफ़ देखा, किंतु पूरा ग्रह राजा की श्वेत पंख वाली शानदार पोशाक से भर गया था। वह खड़ा रहा और क्योंकि वह थका हुआ था, इसलिए उसे जँभाई आ गई।





राजा ने कहा— “राजा के सामने इस तरह मुँह फाड़ना तमीज़ के खिलाफ़ है। मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि ऐसा मत करो।”

नन्हे राजकुमार ने लज्जित भाव से कहा— “यह मेरे बस की बात नहीं है। मैं इसे कैसे रोक्ऊँ। लंबे सफ़र के बाद मैं अभी तक सोया नहीं हूँ।”

राजा ने कहा— “अच्छा, तो मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि जँभाई लो। मैंने बरसों से किसी को जँभाई लेते हुए नहीं देखा है। जँभाई तो मेरे लिए एक कौतूहल की चीज़ है— इसलिए, लो जँभाई। यह मेरा हुक्म है।”

लज्जित होकर राजकुमार ने गुनगुनाते हुए कहा— “मुझे तो डर लग रहा है... और जँभाई नहीं ले सकता।”

राजा ने कहा— “तो फिर, मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि कभी जँभाई लो और कभी नहीं।”

राजा कुछ बड़बड़ाया। ऐसा लगा कि जैसे गुस्सा हो गया हो। दरअसल वह चाहता था कि उसका प्रभुत्व पूरा-पूरा स्वीकार



किया जाए। कोई कहना न माने, यह वह किसी हालत में भी सहन नहीं कर सकता था। किंतु वह बहुत भला आदमी था। इसलिए उसके हुक्म भी युक्तिसंगत होते थे।

उदाहरण के लिए वह कहता था कि अगर मैं किसी कप्तान को एक चिड़िया बन जाने का हुक्म दूँ और अगर वह आज्ञा का पालन न करे, तो यह उसका अपराध नहीं होगा, मेरा होगा।

नन्हे राजकुमार ने संकोच के साथ बैठने की आज्ञा माँगी।

एक हाथ से अपने चोगे के पल्ले को ठीक करते हुए राजा बोला— “मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम बैठ जाओ।”

नन्हा राजकुमार असमंजस के साथ सोचने लगा कि ग्रह तो छोटा-सा है, यह राजा किस पर राज करता होगा। उसने राजा से कहा— “क्षमा करें, मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।”

राजा ने तुरंत उसे विश्वास दिलाते हुए कहा— “मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम मुझसे एक प्रश्न पूछो।”

“राजन्! आप किस पर राज करते हैं?”

शानदार सादगी के साथ राजा ने कहा— “हर चीज पर, हरेक पर।” यह कहकर उसने ऐसा इशारा किया कि उसमें उसके ग्रह के साथ-साथ दूसरे सब ग्रह, सब सितारे भी समा जाएँ।

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “उन सबके ऊपर?”

राजा ने उत्तर दिया— “हाँ, उन सब के ऊपर।”

उसका राज संपूर्ण राज्य में ही केवल नहीं था, वह सार्वभौम भी था। राजकुमार ने पूछा— “वे सितारे भी आपकी आज्ञा का पालन करते हैं?”

“जरूर करते हैं और फौरन करते हैं। मैं आज्ञा की अवहेलना सहन नहीं करता।”

ऐसा अधिकार तो राजकुमार को अचरज में डालने वाली बात ही थी। अगर उसका इतना अधिकार होता, तो वह सूर्यास्त दिन में चवालीस बार नहीं, बहत्तर बार, सौ बार, बल्कि दो सौ बार अपनी कुर्सी बिना सरकाए ही देखता। यह सोचकर उसको अपने छोड़े गए ग्रह की याद आई और उसका मन उदास हो गया। उसने साहस करके राजा से प्रार्थना



की- “मुझ पर कृपा करें राजन। मैं सूर्यास्त देखना चाहता हूँ। सूर्य को अस्त होने के लिए हुक्म दीजिए।”

राजा ने पूछा- “अगर मैं किसी कप्तान को एक फूल से दूसरे फूल पर तितली की भाँति उड़ने के लिए कहूँ या उससे कहूँ कि वह एक दुःखांत नाटक लिखे या समुद्र का पक्षी बन जाए और वह कप्तान उस हुक्म का पालन न करे, तो तुम ही बताओ गलती किसकी होगी? कप्तान की या मेरी?”

नन्हे राजकुमार ने विश्वास के साथ कहा- “आपकी।”

राजा ने कहा- “बिलकुल ठीक। जितनी जिसकी शक्ति होती है, उससे उतनी ही अपेक्षा करनी चाहिए। सर्वमान्य अधिकार प्रथमतः युक्ति पर आधारित होता है। अगर राजा अपनी प्रजा को समुद्र में डूब जाने का हुक्म दे तो वह बगावत कर बैठेगी। मैं अपने हुक्म के पालन की अपेक्षा इसलिए करता हूँ, क्योंकि मेरे हुक्म युक्तिसंगत होते हैं।”

नन्हा राजकुमार अपने पूछे हुए प्रश्न को कभी नहीं भूलता था। उसने कहा- “मुझे सूर्यास्त दिखाइए।”

राजा ने कहा- “तुम्हें सूर्यास्त अवश्य दिखाऊँगा। मैं उसे हुक्म जरूर दूँगा। किंतु मेरी सरकार के राजनीतिशास्त्र के अनुसार उपयुक्त समय आने तक इंतजार करूँगा।”

राजकुमार ने पूछा- “उपयुक्त समय कब आएगा?”

कुछ कहने से पहले राजा ने एक मोटा-सा पंचांग देखा- “हाँ! हाँ! समय होगा... करीब-करीब... आज शाम को आठ बजने में बीस मिनट पर। तब तुम देखोगे कि मेरे हुक्म का कितनी अच्छी तरह पालन होता है।”

नन्हे राजकुमार को जँभाई आई। उसको अपना सूर्यास्त याद आया और वह खेद महसूस करने लगा। अब वह इस चर्चा से ऊबने भी लगा था।

उसने राजा से कहा- “मुझे यहाँ और काम नहीं है। अब मैं आगे अपना रास्ता पकड़ता हूँ।”

राजा एक प्रजा मिलने के कारण गर्व महसूस कर रहा था। वह बोला- “मत जाओ, मैं तुम्हें मंत्री बना दूँगा। तुम मत जाओ।”

“मंत्री, किसका मंत्री?”



“न्याय-मंत्री।”

“किंतु यहाँ न्याय करें किसका? कोई तो है नहीं!”

राजा ने कहा “हमें नहीं मालूम। मैंने अभी तक अपने ग्रह का पूरा दौरा नहीं किया है। बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। चलते-चलते थक जाता हूँ और गाड़ी चलने लायक जगह यहाँ है नहीं।”

नन्हे राजकुमार ने ग्रह की दूसरी ओर नज़र घुमाते हुए कहा— “मैंने तो सब देख लिया है। यहाँ कोई भी नहीं है।”

राजा ने उत्तर दिया— “तो फिर तुम अपने ऊपर ही न्यायाधीश का काम करो। वह तो सबसे कठिन चीज़ है। दूसरों के मुकाबले अपने-आपको जाँचना अधिक कठिन है। और अगर तुम अपने-आप को ठीक-ठीक जाँच सकते हो, तो तुम सच्चे ज्ञानी व्यक्ति होगे।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “वह तो मैं कहीं भी कर सकता हूँ। उसके लिए इसी ग्रह पर रहने की क्या आवश्यकता?”

राजा ने कुछ गंभीर आवाज़ में कहा— “हाँ। मुझे विश्वास है कि मेरे ग्रह पर जरूर एक बूढ़ा चूहा रहता है। मुझे रात को उसकी आवाज़ सुनाई देती है। तुम उसकी ही कानूनी जाँच करना। बीच-बीच में उसे प्राणदंड देना। उसकी ज़िदगी पूरी-पूरी तुम्हारे हाथ में ही रहेगी। उसे होशियारी से बरतना, क्योंकि हमारे पास केवल वही एक प्रजा है। इसलिए हर बार उसे क्षमा भी कर दिया करना।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “मैं किसी को प्राणदंड देना पसंद नहीं करता। मैं सोचता हूँ कि मुझे अब आगे चलना चाहिए।”

राजा ने उससे फिर न जाने के लिए कहा।

नन्हे राजकुमार ने जाने की तैयारी कर ली थी, किंतु वह राजा के दिल को दुखाना नहीं चाहता था। उसने कहा— “राजन, अगर आप चाहते हैं कि आपकी आज्ञा का पालन हो तो ऐसा हुक्म दें जो युक्तिसंगत हो। यह हुक्म दीजिए कि मुझे एक मिनट के अंदर ही चला जाना चाहिए। मुझे लगता है कि इसके लिए समय अनुकूल है...”

राजा ने उत्तर नहीं दिया तो राजकुमार थोड़ा रुका। किंतु फिर एक लंबी साँस ले उसने विदा ली।



राजा ने उतावले ढंग से पुकार कर कहा— “मैं तुम्हें अपना राजदूत बनाता हूँ।”

राजा की शान निराली थी।

नन्हा राजकुमार चलते-चलते मन-ही-मन अपने से कह रहा था कि सयाने भी बड़े विचित्र होते हैं।



दूसरे ग्रह पर एक घमंडी आदमी रहता था।

उसने जब दूर से नन्हे राजकुमार को आते हुए देखा, तो वहीं से कहा— “आहा! मेरा एक प्रशंसक आ रहा है।”

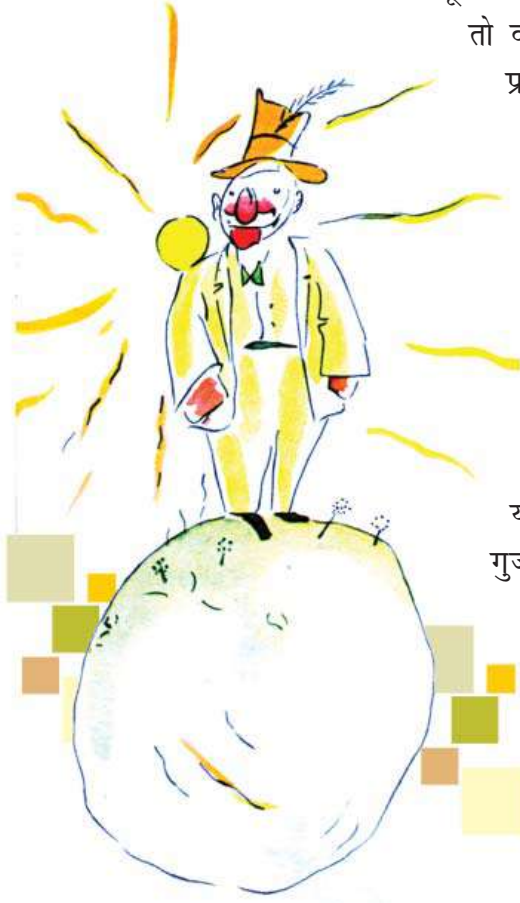
घमंडी लोगों के लिए तो सभी उनके प्रशंसक ही होते हैं न।

नन्हे राजकुमार ने उसे नमस्ते किया और कहा— “बड़ा अजीब टोप पहना है आपने।”

घमंडी आदमी ने कहा— “यह टोप है सलाम का जवाब देने के लिए। लेकिन दुर्भाग्यवश यहाँ से कभी भी कोई नहीं गुज़रता।”

राजकुमार ने कहा— “अच्छा!” लेकिन वह घमंडी आदमी की बात बिलकुल भी नहीं समझा।

इसके बाद घमंडी आदमी ने राजकुमार को निर्देश दिया— “दोनों हाथों से ताली बजाओ।”



नन्हे राजकुमार ने ताली बजाई और घमंडी आदमी ने विनयपूर्वक टोप उठाते हुए उसे सलाम का जवाब दिया।

नन्हे राजकुमार को इसमें बड़ा मज़ा आया। उसने सोचा कि राजा वाले ग्रह की यात्रा से तो यह अधिक मजेदार है। उसने फिर-से अपने दोनों हाथों से ताली बजाई। घमंडी आदमी ने फिर-से टोप उठाकर सलाम का जवाब दिया।

इस उबा देने वाली कसरत को पाँच मिनट तक करने के बाद राजकुमार थक गया।

उसने पूछा— “अगर यह टोप उतरवाना हो, तो क्या करना चाहिए?”

घमंडी आदमी ने उसका सवाल सुना भी नहीं। घमंडी लोग सिवाए प्रशंसा के और कुछ सुनते ही नहीं हैं।

उसने नन्हे राजकुमार से पूछा— “क्या तुम सचमुच मेरे बड़े प्रशंसक हो?”

“प्रशंसक? वह क्या चीज़ होती है?”

“प्रशंसा करते हो, यानी तुम मुझे इस ग्रह का सबसे सुंदर, सबसे सजीला, अमीर और सबसे बुद्धिमान व्यक्ति मानते हो।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “पर, तुम्हारे इस ग्रह पर तो तुम ही अकेले हो।”

“तो भी, कृपया मेरी प्रशंसा करो ना।”

नन्हे राजकुमार ने कंधे सिकोड़ते हुए उससे कहा— “तुम बड़े ही अच्छे हो। पर तुम्हें यह सुनने में क्या मज़ा आता है?”

यह कह कर नन्हा राजकुमार चला गया। यात्रा करते-करते वह मन-ही-मन सोच रहा था— “ये सयाने सचमुच बड़े अजीब होते हैं।”



इसके बाद के ग्रह पर एक शराबी रहता था। राजकुमार वहाँ अधिक समय नहीं रहा, किंतु वह मायूसी में डूब गया। शराबी के सामने बहुत-सी खाली और भरी हुई बोतलें रखी थीं। राजकुमार ने उससे पूछा— “तुम यहाँ क्या कर रहे हो?”





उसने उदास स्वर में उत्तर दिया— “मैं शराब पी रहा हूँ।”

“शराब क्यों पीते हो?”

शराबी ने उत्तर दिया— “ताकि भूल सकूँ।”

नन्हे राजकुमार को उसके ऊपर दया आ रही थी। उसने पूछा— “क्या भूल सको?”

शराबी ने सिर नीचे झुकाते हुए स्वीकार किया— “मैं भूलना चाहता हूँ कि मैं लज्जित हूँ।”

नन्हा राजकुमार उसकी सहायता करना चाहता था। इसलिए उसने आग्रहपूर्वक कहा— “लज्जित, किस लिए?”

शराबी ने अपना आखिरी वाक्य कहा— “शराब पीता हूँ, इसलिए लज्जित हूँ।” और उसने मौन धारण कर लिया। नन्हा राजकुमार अर्चभित होकर चला गया।

यात्रा शुरू करने के समय उसके मन में यही विचार आ रहा था— “सयाने तो सचमुच बहुत ही विचित्र होते हैं।”



चौथा ग्रह एक व्यापारी का था। वह इतना व्यस्त था कि जब नन्हा राजकुमार वहाँ पहुँचा, तो उसने सिर उठाकर भी नहीं देखा।

नन्हे राजकुमार ने उससे कहा— “नमस्ते। तुम्हारी तो सिगरेट भी बुझ गई।”

“तीन और दो पाँच। पाँच और सात बारह। बारह और तीन पंद्रह। नमस्ते। पंद्रह और सात बाईस। बाईस और छह अठ्ठाईस। सिगरेट फिर-से जलाने का समय नहीं है। छब्बीस और पाँच हुए इकत्तीस। यानी इसका मतलब हुआ— इक्यावन करोड़, छह सौ बाईस हजार, सात सौ इकत्तीस।”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “इक्यावन करोड़, क्या?”

“अरे? तुम अभी भी यहाँ हो? इक्यावन करोड़... मैं रुक नहीं सकता हूँ। मुझे बहुत काम करना है। और वह भी बहुत महत्वपूर्ण काम। मैं अपना समय बेकार की चीज़ों में नष्ट नहीं करता। दो और पाँच सात...”

नन्हे राजकुमार ने अपने जीवन में कभी भी अपने किसी प्रश्न को ऐसे ही नहीं जाने दिया। उसने अपना प्रश्न दोहराया— “इक्यावन करोड़, क्या?”

व्यापारी ने अपना सिर ऊपर उठाया। “मैं इस ग्रह पर पिछले चौवन वर्षों से हूँ। इस अरसे में मुझे तीन बार ही बाधा पहुँची है। पहली बार बाधा हुई थी, आज से बाईस साल पहले, एक भौंरा न जाने कहाँ से टपक पड़ा था। उससे एक भयानक आवाज़ हुई थी और वह आवाज़ सारी जगह गूँज उठी थी। जिसकी वजह से मेरे जोड़ में चार गलतियाँ हो गई थीं। दूसरी बार, आज से ग्यारह वर्ष पहले, मुझे गठिया का रोग हो गया था। टहलने का समय है नहीं, इसलिए आवश्यक व्यायाम करने का समय नहीं मिलता। और तीसरी बार अब, जब कि तुम आए हो। मैं कहाँ था? इक्यावन करोड़...”

“करोड़, क्या?”

व्यापारी समझ गया कि जब तक वह इसका जवाब नहीं देगा उसे चैन नहीं मिलेगा।





“करोड़ों वे छोटी-छोटी चीजें जो कभी-कभी आकाश में दिखाई देती हैं।”

“मक्खियाँ?”

“अरे, नहीं, छोटी-छोटी चमकदार चीजें।”

“मधुमक्खियाँ?”

“अरे नहीं, वे छोटी सुनहरी चीजें, जिन्हें देखकर आलसी लोग सपने देखने लगते हैं। किंतु मैं तो महत्वपूर्ण बातों से ही मतलब रखता हूँ। मेरे जीवन में इन बेकार सपनों के लिए समय नहीं है।”

“ओह! तुम्हारा मतलब है— तारे।”

“हाँ, ठीक, तारे।”



“तुम इक्यावन करोड़ तारों से क्या करते हो?”

“इक्यावन करोड़, छह सौ बाईस हजार, सात सौ इकतीस। मेरा मतलब तो केवल महत्वपूर्ण बातों से ही है। जोड़ बिलकुल ठीक है।”

“तुम इन तारों से क्या करते हो?”

“तुम जानना चाहते हो कि मैं उनसे क्या करता हूँ?”

“हाँ”

“कुछ नहीं करता। मैं तो उनका मालिक हूँ।”

“तुम तारों के मालिक हो?”

“हाँ”

“किंतु मैंने तो एक राजा देखा है, जो कहता था कि...”

“राजा मालिक नहीं होते, वे तो राज करते हैं। यह बिलकुल ही अलग बात है।”

“इन तारों के मालिक होने से तुम्हें क्या लाभ होता है?”

“इनसे मैं अमीर होता हूँ।”

“और अमीर होने से क्या लाभ?”

“उससे मैं अधिक तारे खरीद सकता हूँ। अगर नए तारों की खोज हो, तो मैं उन्हें खरीद लूँगा।”

नन्हे राजकुमार ने मन-ही-मन सोचा कि यह आदमी भी उसी शराबी की तरह तर्क करता है। फिर भी वह और प्रश्न पूछना चाहता था।

“तारों का मालिक कैसे बना जाता है?”

व्यापारी ने चिड़चिड़ी आवाज़ में पूछा— “कौन है उनका मालिक?”

“मालूम नहीं। कोई भी नहीं।”

“तो फिर वे मेरे हैं, क्योंकि मैंने ही सबसे पहले उनके बारे में सोचा।”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “तो क्या मालिक होने के लिए इतना ही काफ़ी है?”

“बेशक। अगर तुम्हें एक हीरा ऐसा मिल जाए, जिसका कोई मालिक नहीं, तो वह तुम्हारा ही होगा। अगर तुम एक द्वीप की खोज करो और उस पर किसी और का प्रभुत्व न हो, तो तुम्हीं उसके मालिक होगे। अगर तुम्हें कोई नया विचार आए, तो तुम उसका पेटेंट ले लोगे। ऐसे ही, ये



तारे मेरे इसलिए हैं, क्योंकि मुझसे पहले किसी ने उन्हें लेने की बात नहीं सोची।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “सच है। तो, तुम उनका करते क्या हो?”

व्यापारी ने उत्तर दिया— “मैं उनकी व्यवस्था करता हूँ। उन्हें एक बार गिनता हूँ, और फिर गिनता हूँ। बड़ा कठिन है यह काम। किंतु मैं तो इस तरह की महत्वपूर्ण बातों में रुचि रखता हूँ न।”

नन्हे राजकुमार को अभी भी संतोष नहीं हुआ था। उसने कहा— “अगर मेरे पास एक गुलूबंद हो, तो मैं उसे गले पर लपेट सकता हूँ या कहीं ले जा सकता हूँ। अगर फूल हो, तो उसे तोड़कर अपने साथ ले जा सकता हूँ। किंतु तुम तो तारों को आकाश से तोड़ नहीं सकते...”

“नहीं तोड़ सकता। किंतु उन्हें बैंक में तो जमा कर सकता हूँ।”

“उसका क्या अर्थ?”

“इसका अर्थ है कि इन तारों की संख्या एक छोटे-से कागज़ पर लिख कर दराज़ में रख देता हूँ। और उस पर ताला लगा देता हूँ।”

“बस इतना ही?”

व्यापारी ने कहा— “इतना काफ़ी है।”

नन्हे राजकुमार ने सोचा— कितनी मजेदार बात है। काव्यात्मक भी है, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण नहीं है।

महत्वपूर्ण बातों के बारे में नन्हे राजकुमार के विचार सयानों के विचारों से काफ़ी अलग थे।

व्यापारी से बात करते-करते उसने कहा— “मेरा भी एक फूल है। उसे मैं रोज सींचता हूँ। मेरे तीन ज्वालामुखी पहाड़ हैं। जिन्हें हर हफ्ते साफ़ करता हूँ। उनमें से जो ठंडा है, उसे भी यही सोचकर साफ़ करता हूँ कि न जाने कब क्या हो जाए। इससे ज्वालामुखियों और फूल को भी कुछ-न-कुछ लाभ होता है, किंतु तारों को तो तुमसे कोई लाभ नहीं...”

व्यापारी ने मुँह तो खोला पर कुछ उत्तर न दे पाया। नन्हा राजकुमार चला गया।

वह अपने-आप से यह बात करता-करता यात्रा पर निकल पड़ा— “सयाने तो एकदम असाधारण ढंग से विचित्र होते हैं।”



पाँचवाँ ग्रह बड़ा विचित्र था। सबसे छोटा, जिस पर केवल एक रास्ते की रोशनी के खंभे और उसे जलाने वाले के आने-जाने लायक ही स्थान था। नन्हा राजकुमार इस पहेली को न सुलझा सका कि आकाश में एक ऐसे छोटे-से ग्रह पर, जिस पर न तो कोई रहता है और न ही वहाँ कोई मकान है, एक रोशनी के खंभे और रोशनी जलाने वाले की क्या आवश्यकता है।

उसके मन में विचार आया— “हो सकता है कि यह आदमी बेतुका हो। किंतु वह इतना बेतुका तो नहीं है जितना वह राजा था, वह घमंडी आदमी था, व्यापारी या वह शराबी था। इसके काम का कुछ-न-कुछ अर्थ तो है ही। जब वह अपनी रास्तेवाली रोशनी को जलाता है, तो मानो एक नए ग्रह को या नए फूल को जन्म दे रहा है। जब बुझाता है तो जैसे उन्हें सुला रहा है। बड़ा सुंदर धंधा है। और क्योंकि सुंदर है, इसलिए सचमुच उपयोगी भी है।”

जब वह ग्रह पर पहुँचा, तो उसने आदरपूर्वक रोशनी जलाने वाले को नमस्ते किया।

“नमस्ते, तुमने अपनी रोशनी क्यों बुझा दी?”

“नमस्ते, ऐसी आज्ञा है, इसलिए।”

“क्या है आज्ञा?”

“आज्ञा यह है कि मैं रोशनी बुझा दूँ। शुभ रात्रि।”

इतना कहकर उसने फिर-से रोशनी जला दी।

नन्हे राजकुमार ने पूछा कि उसने फिर-से रोशनी क्यों जला दी?

“वैसी ही आज्ञा है।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “मैं तुम्हारी बात नहीं समझ सका।”

“समझने की कोई बात नहीं है। हुक्म तो आखिर हुक्म ही है। शुभ प्रभात।”

उसने फिर-से रोशनी बुझा दी।

फिर अपने लाल चारखाने वाले रूमाल से अपना माथा पोंछा।

उसने कहा— “बड़ी कठिन नौकरी है मेरी। पुराने जमाने में तो ठीक था। रोज सुबह रोशनी जलाया करता था और शाम को बुझा दिया करता था। दिन में आराम के लिए और रात को सोने के लिए समय मिलता था।”





“बड़ी कठिन नौकरी है मेरी...”



“तो क्या अब आज्ञा बदल गई है?”

रोशनी जलाने वाले ने कहा— “आज्ञा नहीं बदली, यही तो दुःख है। प्रतिवर्ष ग्रह अधिक गति से घूमने लगा है, किंतु आज्ञा नहीं बदली।”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “तो फिर...”

“ग्रह अब प्रति मिनट एक चक्कर लगा देता है। इसलिए मुझे एक सेकंड भी फुरसत नहीं मिलती। हर मिनट में रोशनी जलानी पड़ती है और बुझानी पड़ती है।”

“बड़ा विचित्र है। तुम्हारे इस ग्रह पर एक दिन एक मिनट का ही होता है?”

रोशनी जलाने वाले ने कहा— “विचित्र नहीं है। अभी बात करते-करते एक महीना बीत गया।”

“एक महीना?”

“हाँ, एक महीना। तीस मिनट! तीस दिन। शुभ रात्रि।”

और उसने फिर रोशनी जला दी।

यह देखते-देखते नन्हे राजकुमार के मन में रोशनी जलाने वाले के प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया, क्योंकि अपने काम के प्रति वह बड़ा वफ़ादार था। उसे अन्य दिनों के वे सूर्यास्त याद आ गए, जिन्हें वह केवल अपनी कुर्सी को खिसका कर ही देख लेता था। उसकी इच्छा हुई कि वह इस मित्र की मदद करे। उसने रोशनी जलाने वाले से कहा— “जानते हो। मैं तुम्हें एक तरकीब बता सकता हूँ, जिससे तुम जब चाहो आराम कर सको।”

रोशनी जलाने वाले ने कहा— “मैं तो हमेशा आराम करना चाहता हूँ।”

मनुष्य के लिए एक ही साथ वफ़ादार और आलसी होना संभव है।

नन्हा राजकुमार उसे समझाने लगा— “तुम्हारा ग्रह इतना छोटा है कि तीन लंबे-लंबे कदमों में ही इसका चक्कर लग जाए। अगर हमेशा सूर्य के प्रकाश में रहना चाहते हो तो केवल धीरे-धीरे चलने से ही काम चल जाएगा। जब आराम करना चाहो तो थोड़ा चलना, बस। दिन जितना लंबा तुम चाहो, हो जाएगा।”

रोशनी जलाने वाले ने कहा— “उससे मेरा कोई लाभ नहीं होगा। ज़िंदगी में एक ही चीज़ चाहता हूँ— वह है नींद।”



नन्हे राजकुमार ने कहा— “तो फिर तुम्हारा भाग्य अच्छा नहीं है।”
रोशनी जलाने वाले ने कहा— “हाँ, मेरा भाग्य अच्छा नहीं है। शुभ प्रभात।”

इतना कहकर उसने रोशनी बुझा दी।

नन्हा राजकुमार अपनी यात्रा के लिए निकल पड़ा। वह अपने मन में सोचने लगा— “राजा, घमंडी आदमी, शराबी और व्यापारी, सभी इस आदमी को नीची नज़र से देखेंगे। किंतु मुझे तो वही एक ऐसा दिखा, जो हास्यास्पद नहीं है। शायद इसलिए कि वह अपने आप के अलावा कुछ दूसरी चीज़ की भी चिंता करता है।” यह सोचकर उसने एक दुःख भरी साँस ली और मन-ही-मन कहा— उन सबमें से केवल यही एक आदमी था, जिसे मैं मित्र बना सकता था। किंतु यह ग्रह इतना छोटा है कि दो लोगों की जगह वहाँ नहीं है।

दरअसल इस ग्रह को छोड़ते हुए नन्हे राजकुमार को इसलिए बुरा लग रहा था, क्योंकि इस ग्रह से एक दिन में 1440 सूर्यास्त देखे जा सकते थे।



छठा ग्रह पिछले वाले ग्रह से दस गुना बड़ा था। इस पर एक बूढ़ा रहता था। वह खूब मोटी-मोटी पोथियाँ लिखता था।

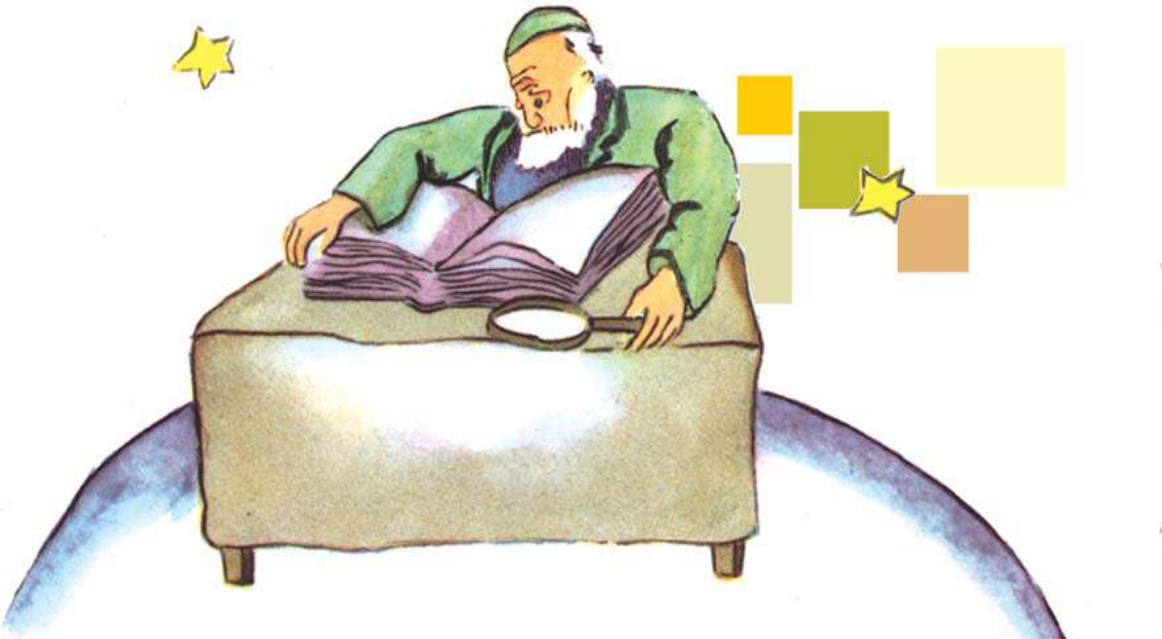
जब उसने नन्हे राजकुमार को आते हुए देखा, तो वह अपने-आप से कहने लगा— “लो! एक अन्वेषक आ रहा है।”

नन्हा राजकुमार बहुत दूर की लंबी यात्रा कर चुका था। उसकी थोड़ी साँस भी फूल गई थी। वह जाकर मेज़ पर बैठ गया।

बूढ़े ने उससे पूछा— “तुम कहाँ से आए हो?”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “वह बड़ी-सी पुस्तक कैसी है? तुम क्या करते हो?”





बूढ़े ने कहा— “मैं भूगोलशास्त्री हूँ।”
 राजकुमार ने पूछा— “भूगोलशास्त्री कौन होता है?”
 “जो समुद्रों, नदियों, शहरों, पहाड़ों और रेगिस्तानों की स्थिति जानता है, वह विद्वान भूगोलशास्त्री कहलाता है।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “यह तो बड़ी मजेदार बात है। यह आदमी सचमुच एक असली पेशे वाला है।” उसने भूगोलशास्त्री के ग्रह को चारों तरफ़ नज़र घुमाकर देखा। वह सबसे शानदार और शाही ग्रह था। उसने ऐसा ग्रह पहले कभी नहीं देखा था।

उसने कहा— “तुम्हारा ग्रह बड़ा सुंदर है। यहाँ कोई समुद्र है?”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “मैं कह नहीं सकता।”

नन्हा राजकुमार निराश हो गया। उसने पूछा— “यहाँ पहाड़ है?”

भूगोलशास्त्री बोला— “नहीं, कह सकता।”

“शहर, नदी और रेगिस्तान हैं?”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “वह भी नहीं बता सकूँगा।”

“परंतु तुम तो भूगोलशास्त्री हो न?”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “मैं तो भूगोलशास्त्री हूँ, अन्वेषक नहीं। मेरे ग्रह



पर कोई अन्वेषक नहीं है। और भूगोलशास्त्री कभी शहरों, नदियों, पहाड़ों, रेगिस्तानों या समुद्रों को गिनने नहीं जाता। उसका काम इधर-उधर जाने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है। वह अपने डेस्क को नहीं छोड़ता। अन्वेषक लोग उसके अध्ययन-गृह में आते हैं। वह उनसे प्रश्न पूछता है और उनके भ्रमण की बातों को लिख लेता है। अगर उनमें से किसी की बातें उसे रुचिकर लगें तो उस अन्वेषक के नैतिक चरित्र के बारे में छानबीन कराता है।”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “ऐसा क्यों?”

“अगर अन्वेषक झूठ बोलने वाला हो या अधिक शराब पीता हो तो भूगोलशास्त्री की पुस्तकों को बरबाद कर देगा।”

नन्हे राजकुमार ने फिर पूछा— “ऐसा क्यों?”

“नशे में आदमी को चीज़ें एक के बदले दो दिखाई देती हैं। भूगोलशास्त्री उसकी बात मानकर अपनी किताब में एक के बदले दो पहाड़ लिख देगा।”

राजकुमार ने कहा— “मैं ऐसे ही एक आदमी को जानता हूँ जो अच्छा अन्वेषक नहीं हो सकता।”

“हाँ, तुम्हारी बात ठीक हो सकती है। अगर यह तय हो जाए कि अन्वेषक का नैतिक चरित्र अच्छा है तो उसके बाद उसके अन्वेषण के बारे में जाँच की जाती है।

“तो क्या कोई उसे देखने जाता है?”

“नहीं। वह तो बड़ा जटिल काम हो जाएगा। अन्वेषक को ही सबूत पेश करने होते हैं। उदाहरणार्थ— अगर अन्वेषण किसी बड़े पहाड़ के बारे में हो, तो आवश्यक है कि वहाँ से बड़े-बड़े पत्थर सबूत के तौर पर लाए जाएँ।”

भूगोलशास्त्री अचानक उत्तेजित होकर बोला— “तुम...! तुम तो बहुत दूर से आए हो और तुम अन्वेषक भी हो। अपने ग्रह का वर्णन सुनाओ।”

भूगोलशास्त्री ने अपना बड़ा पोथा खोला और पेंसिल पैनी की। अन्वेषकों के बयान पहले पेंसिल से लिखे जाते हैं और सबूत मिलने के बाद ही उन्हें स्याही से दर्ज किया जाता है।

भूगोलशास्त्री ने अपेक्षा के भाव से कहा— “अच्छा, तो करो शुरू”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “अरे, जहाँ मैं रहता हूँ, वह कोई बड़ी रुचिकर



जगह नहीं है। बड़ी ही छोटी जगह है। मेरे तीन ज्वालामुखी पहाड़ हैं। उनमें से दो जीवित/सक्रिय हैं और तीसरा निष्क्रिय है। पर कौन जाने कब क्या हो जाए।”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “सच है— कौन जाने कब क्या हो जाए।”

“मेरा एक फूल भी है।”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “हम फूलों की जानकारी दर्ज नहीं करते हैं।”

नन्हा राजकुमार बोला— “पर, ऐसा क्यों? वह फूल तो मेरे ग्रह की सबसे सुंदर चीज़ है।”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “हम उन्हें नहीं लिखते, क्योंकि वे क्षणजीवी होते हैं।”

“क्षणजीवी! इसका क्या अर्थ है?”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “भूगोल ग्रंथ सबसे उम्दा ग्रंथ होते हैं, वे कभी पुराने नहीं होते, क्योंकि पहाड़ तो कभी अपनी जगह नहीं बदलता। यह बिरले ही होता है कि समुद्र सूख जाए। हम लोग केवल चिरकाल तक रहने वाली वस्तुओं को ही लिखते हैं।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “बुझे हुए ज्वालामुखी भी तो कभी-कभी फूट पड़ते हैं, पर क्षणजीवी क्या होता है?”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “ज्वालामुखी ठंडा हो या जीवित, हमारे लिए तो एक ही बात है। हमें तो पहाड़ से मतलब है। वह बदलता नहीं है।”

नन्हा राजकुमार अपने प्रश्न को कभी ऐसे ही नहीं जाने देता था। इसलिए उसने दोहराया— “क्षणजीवी क्या होता है?”

“इसका अर्थ है— जिसका शीघ्र ही नष्ट होने का डर हो।”

“तो क्या मेरे फूल को शीघ्र नष्ट हो जाने का खतरा है?”

“अवश्य।”

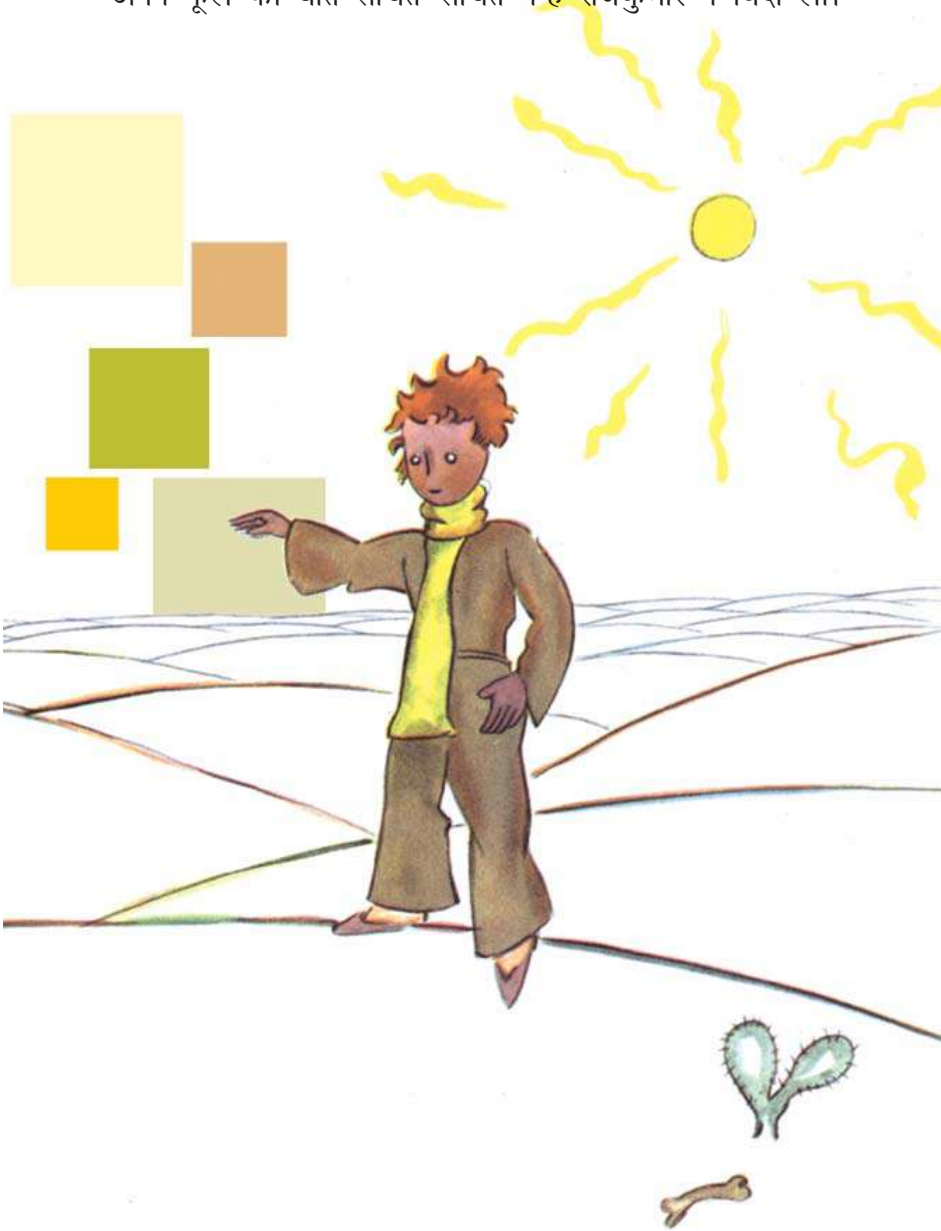
नन्हे राजकुमार ने अपने मन में कहा— “मेरा फूल क्षणजीवी है। दुनिया के खतरों के खिलाफ़ उसके पास तो केवल चार काँटे ही हैं और मैं उसे अपने ग्रह पर अकेला ही छोड़ आया हूँ।”

अपनी यात्रा में पहली बार नन्हे राजकुमार ने पश्चाताप महसूस किया। किंतु उसने फिर-से साहस किया।



उसने भूगोलशास्त्री से पूछा— “तुम्हारी क्या राय है? मैं किस स्थान की यात्रा करूँ?”

भूगोलशास्त्री ने कहा— “पृथ्वी की यात्रा करो। उसका बड़ा नाम सुना है।”
अपने फूल की बात सोचते-सोचते नन्हे राजकुमार ने विदा ली।



16

इस तरह सातवाँ ग्रह था— पृथ्वी।

पृथ्वी कोई साधारण ग्रह नहीं है! वहाँ राजाओं की संख्या होगी 111 (उनमें नीग्रो राजा भी हैं), भूगोलशास्त्री 7,000, व्यापारी 9,000,000, शराबी 7,500,000, घमंडी आदमी 311,000,000 – यानी कुल मिलाकर 2,000,000,000 सयाने।

पृथ्वी कितनी बड़ी है इसका अनुमान लगाने के लिए आपको एक बात बताता हूँ— बिजली का आविष्कार होने के पहले पूरे छहों महाद्वीपों में रास्ते की बत्तियाँ जलाने के लिए 4,62,511 लोगों की एक पूरी फ़ौज लगती थी।

इन्हें अगर कुछ दूर से देखा जाए, तो भव्य दृश्य दिखेगा। बैले नृत्य में जैसे नर्तकों का प्रवेश एक-एक करके होता है, वैसे ही ये भी दिखेंगे। पहले तो दिखेंगे— न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया के दीये जलाने वाले। अपने-अपने दीये जलाने के बाद वे जाकर सो जाएँगे। फिर चीन और साइबेरिया के दीये जलाने वालों का मंच पर प्रवेश होगा। फिर वे नर्तकों की तरह परदे के पीछे चले जाएँगे। उनके बाद बारी आएगी रूस और भारत वालों की और फिर अफ़्रीका और यूरोप वालों की। उनके चले जाने के बाद दक्षिणी अमेरिका और फिर उत्तरी अमेरिका वाले आएँगे। वह नाटक की तरह ही बड़ा शानदार दिखेगा। ये रोशनी जलाने वाले अपने प्रवेश में कभी भी गलती नहीं करेंगे।

दो रोशनी जलाने वाले ऐसे हैं, जो मेहनत और चिंता से मुक्त रहेंगे। उनमें से एक तो वह है, जो उत्तरी ध्रुव की एकमात्र रोशनी जलाने वाला है और दूसरा उसका वह साथी है, जिसकी जिम्मेदारी दक्षिणी ध्रुव की रोशनी की है। वे साल में केवल दो बार ही व्यस्त होंगे।

17

जब हम कुछ मजेदार बात बताना चाहते हैं तो कभी-कभी सत्य से थोड़ा हट जाते हैं। मैंने रोशनी जलाने वालों के बारे में जो कुछ कहा है, वह पूरी-पूरी



ईमानदारी से नहीं कहा। इसलिए मुझे डर है कि जो लोग हमारे ग्रह पृथ्वी के बारे में कुछ नहीं जानते, उनके मन में हमारे ग्रह के बारे में गलत धारणा हो गई होगी। मनुष्य पृथ्वी के बहुत छोटे भाग पर रहते हैं। वे संख्या में दो अरब हैं। अगर वे सब इस तरह भीड़ करके खड़े हो जाएँ जैसे किसी सभा में होते हैं तो सब के सब बीस मील लंबे और बीस मील चौड़े स्थान में समा जाएँगे। अगर उनका एक ढेर लगाया जाए तो सभी प्रशांत महासागर के एक लघु द्वीप पर समा जाएँगे।

अगर यह बात सयानों को बताएँ तो उन्हें विश्वास नहीं होगा। वे तो सोचते हैं कि वे पृथ्वी के एक बहुत बड़े हिस्से को घेरते हैं। वे अपने-आपको उतना ही महत्त्व का समझते हैं जितना गोरक्षी का पेड़ समझता है। उन्हें तो यही राय देनी चाहिए कि वे अपना गणित खुद कर लें। वे तो अंकों का हिसाब लगाना पसंद करते हैं, इसलिए यह सुन कर खुश हो जाएँगे। किंतु तुम इसके पीछे अपना समय बरबाद मत करो। यह अनावश्यक है। तुम तो मेरा विश्वास करते हो न!

जब नन्हा राजकुमार पृथ्वी पर पहुँचा तो उसे किसी मनुष्य के न दिखने पर ताज्जुब हुआ। वह यह सोचकर डरने लगा कि कहीं वह गलत ग्रह पर तो नहीं पहुँच गया। उसी समय उसे रेत पर एक सुनहरी रस्सी दिखाई दी, जो चाँदनी के प्रकाश जैसी थी।

उसने उसे भद्र भाव से नमस्ते किया।

साँप ने भी उत्तर में नमस्ते किया।

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “जिस जगह पर मैं उतर आया हूँ, वह कौन-सा ग्रह है?”

साँप ने उत्तर दिया— “पृथ्वी है और यह अफ्रीका है।”

“ओहो! तो क्या पृथ्वी पर मनुष्य नहीं रहते?”

साँप ने कहा— “यह तो रेगिस्तान है। रेगिस्तान पर मनुष्य नहीं रहते। दुनिया तो बहुत बड़ी है।”

नन्हा राजकुमार एक पत्थर पर बैठ गया और उसने आकाश की तरफ़ आँखें उठाईं। फिर बोला— “सितारों को आलोकित इसीलिए किया गया है





“बड़े अजीब प्राणी हो तुम! एक अँगुली से मोटे नहीं हो।”

नन्हा राजकुमार : 50



ताकि हममें से हरेक एक दिन अपने-अपने तारे को पहचान सके... वह देखो मेरे वाला ग्रह, ठीक हमारे ऊपर, परंतु कितना दूर है!”

साँप ने कहा— “बड़ा सुंदर है। तुम यहाँ किसलिए आए हो?”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “एक फूल के साथ मेरी अनबन हो गई थी।”

साँप ने कहा— “अच्छा!”

कुछ देर तक दोनों चुप रहे।

नन्हे राजकुमार ने फिर-से बातचीत शुरू की— “मनुष्य कहाँ है? रेगिस्तान में सब कुछ सूना लगता है।”

साँप ने कहा— “मनुष्यों के साथ रहकर भी सूना लगता है।”

नन्हा राजकुमार यह सुनकर साँप को कुछ देर ताकता रहा और फिर उसने कहा— “बड़े अजीब प्राणी हो तुम! एक अँगुली से अधिक मोटे नहीं हो।”

साँप ने कहा— “किंतु मैं किसी राजा की अँगुली से भी ज्यादा शक्तिशाली हूँ।”

नन्हा राजकुमार मुसकराया।

“तुम अधिक शक्तिशाली नहीं हो। तुम्हारे तो पैर भी नहीं हैं और तुम तो ज्यादा दूर भी नहीं जा सकते।”

साँप ने कहा— “मैं तुम्हें इतनी दूर ले जा सकता हूँ, जहाँ जहाज़ भी नहीं ले जा सकता।” साँप नन्हे राजकुमार के घुटने पर सुनहरी पायल की तरह लिपट गया।

“मैं जिसे भी छू देता हूँ उसे वहीं उसी धरती में भेज देता हूँ जहाँ से वह आया है पर तुम तो भोले और सच्चे हो और एक सितारे से आए हो...”

नन्हे राजकुमार ने कोई उत्तर नहीं दिया।

साँप ने कहा— “तुम्हें देखकर मुझे तरस आता है। इस कठोर पत्थर की पृथ्वी पर तुम कमज़ोर हो। अगर कभी अपने ग्रह की याद सताने लगे, तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। मैं तुम्हें...”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “ओहो, मैं तुम्हारी बात का मतलब अच्छी तरह समझता हूँ। पर तुम हमेशा पहेलियों में क्यों बोलते हो?”



साँप ने कहा— “मैं सब पहेलियों को सुलझा देता हूँ ना।”
फिर वे दोनों चुप हो गए।

18

चलते-चलते नन्हे राजकुमार ने रेगिस्तान पार कर लिया लेकिन उसे एक ही फूल मिला। फूल था— तीन पँखुड़ी वाला और बिलकुल साधारण।

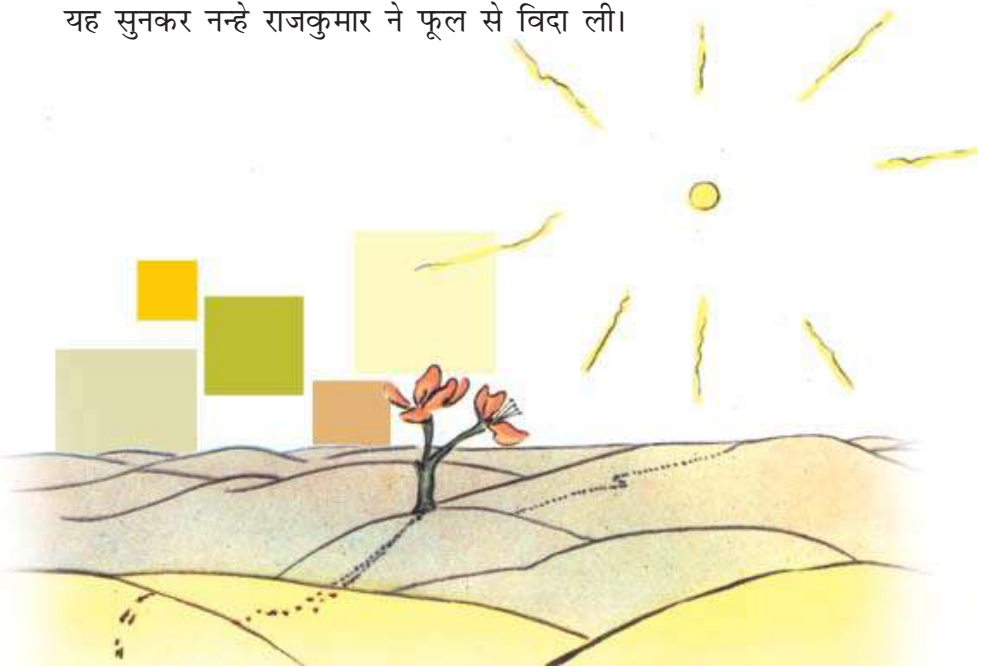
“नमस्ते” कहकर राजकुमार ने उसका अभिनंदन किया।

फूल ने कहा— “नमस्ते”

नन्हे राजकुमार ने विनयपूर्वक पूछा— “मनुष्य कहाँ रहते हैं?”

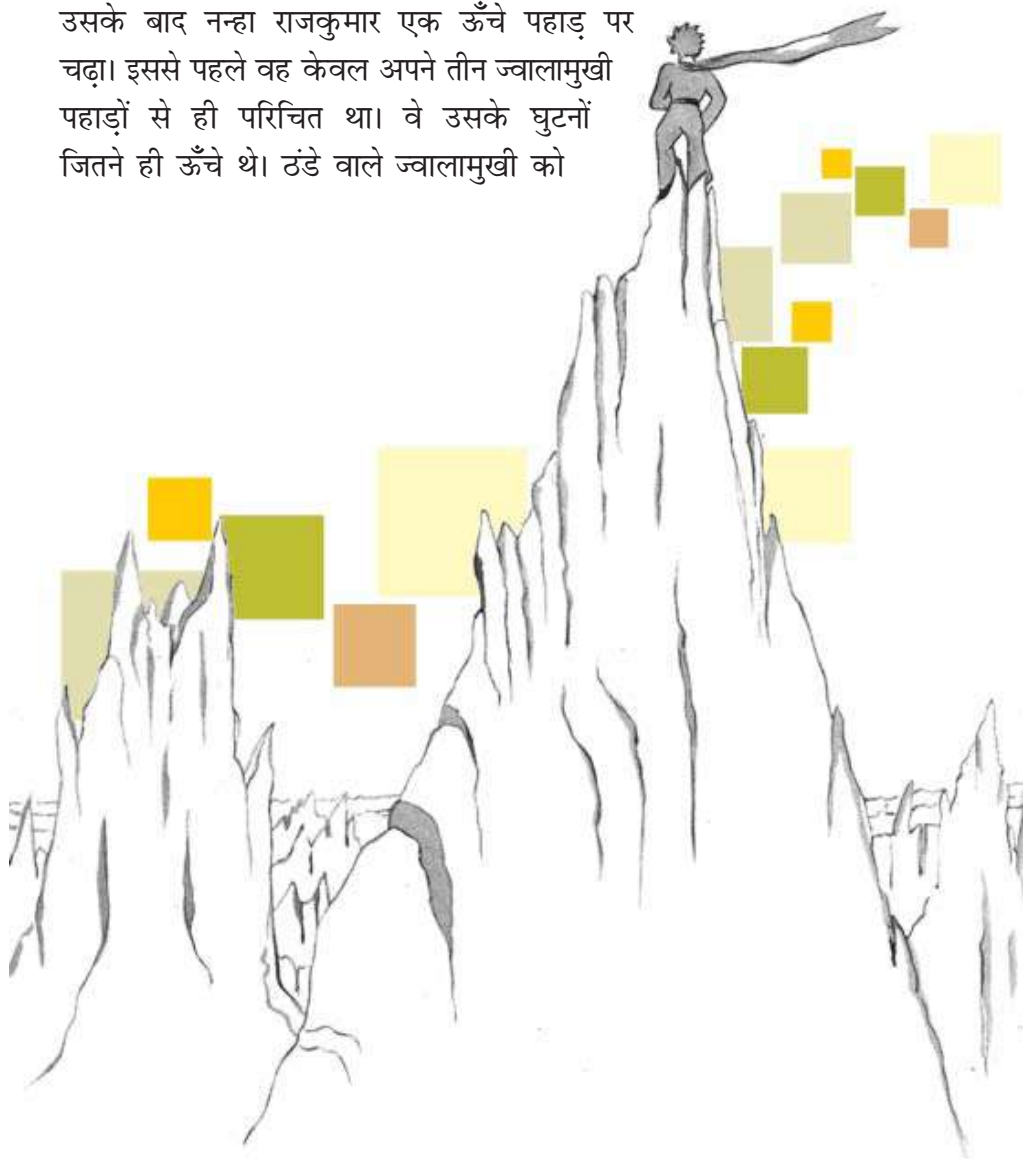
फूल ने एक बार काफ़िला जाते हुए देखा था। उसने उत्तर दिया—
“मनुष्य?” कई वर्षों पहले मैंने उन्हें देखा था, छह या सात थे, अब कहाँ मिलेंगे यह कहना कठिन है। उन्हें हवा उड़ा ले जाती है। उनकी जड़ें नहीं होतीं। इसलिए उनका जीवन कठिन होता है।”

यह सुनकर नन्हे राजकुमार ने फूल से विदा ली।



19

उसके बाद नन्हा राजकुमार एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ा। इससे पहले वह केवल अपने तीन ज्वालामुखी पहाड़ों से ही परिचित था। वे उसके घुटनों जितने ही ऊँचे थे। ठंडे वाले ज्वालामुखी को



कितना अजीब ग्रह है— बिलकुल सूखा, नुकीला और बिलकुल कठोर...



तो वह पैर रखने के स्टूल की तरह इस्तेमाल करता था। इस ऊँचे पहाड़ पर चढ़कर उसने सोचा कि वहाँ से तो वह सारे ग्रहों और उस पर रहने वालों को एक नज़र में देख सकेगा।

किंतु वह पहाड़ की नुकीली चोटियों के सिवाए और कुछ भी देख न सका। वह विनम्र भाव से बोला— “नमस्ते।”

प्रतिध्वनि से जवाब आया— “नमस्ते... नमस्ते... नमस्ते।”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “तुम कौन हो?”

प्रतिध्वनि से फिर जवाब आया— “तुम कौन हो... तुम कौन हो... तुम कौन हो?”

उसने कहा— “तुम मेरे दोस्त बन जाओ। मैं बिल्कुल अकेला हूँ।”

उत्तर आया— “मैं बिल्कुल अकेला हूँ... बिल्कुल अकेला हूँ... बिल्कुल अकेला हूँ।”

उसने सोचा कि पृथ्वी कितना अजीब ग्रह है। बिल्कुल सूखी, बिल्कुल कठोर। यहाँ के लोगों में कल्पनाशक्ति भी नहीं है। उनसे जो कहा जाए, उसी को दोहरा देते हैं। उसे याद आया, उसके ग्रह पर जो फूल था, वह पहले ही बोल देता था...



बहुत देर तक रेत पर, फिर पहाड़ों और बर्फ़ पर चलने के बाद वह एक सड़क पर पहुँचा। सभी सड़कें मनुष्य की बस्तियों तक जाती हैं।

वह एक बगीचे के सामने पहुँचा। बगीचे में गुलाब के फूलों की बहार आ रही थी। उसने फूलों का अभिनंदन किया— “नमस्ते।”

गुलाब के फूलों ने उत्तर दिया— “नमस्ते”

नन्हा राजकुमार उनकी तरफ़ निहारता रहा। सब उसके फूल जैसे ही दिख रहे थे।

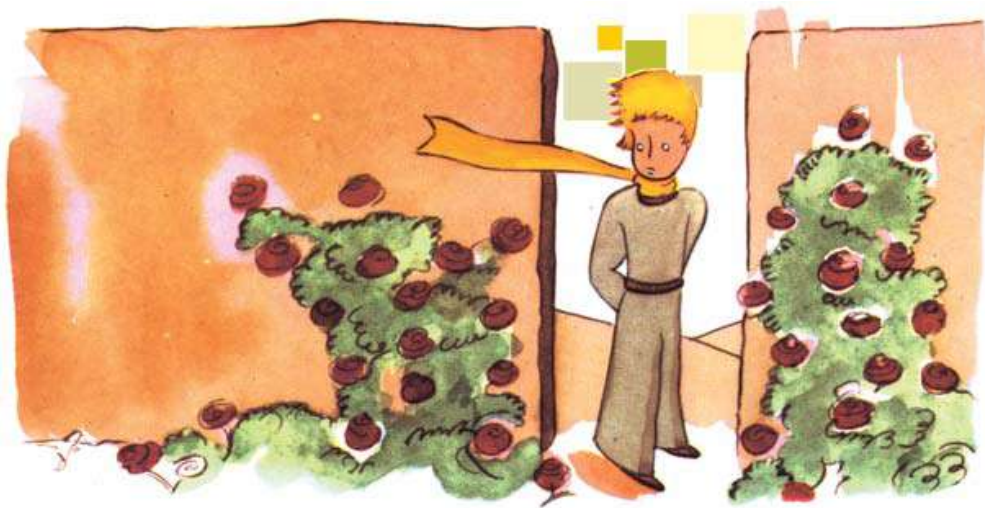
उसने बहुत अचंभित होकर पूछा— “तुम कौन हो?”



“हम गुलाब के फूल हैं।”

यह सुनकर उसका मन उदास हो गया। उसके फूल ने तो उससे कहा था कि ब्रह्मांड में उस जैसा वही एक फूल है। किंतु यहाँ तो एक ही बगीचे में एक जैसे पाँच हजार फूल हैं!

वह मन-ही-मन सोचने लगा कि अगर उसके फूल को यह पता चल जाए, तो उसे बड़ा बुरा लगेगा। कोई दूसरा उस पर न हँसे, इसलिए वह खूब खाँसने लगेगा और बहाना करेगा कि जैसे मरा जा रहा हो। मुझे भी बहाना बनाना पड़ेगा कि मैं उसके दुःख से दुःखी होकर उसकी सेवा कर रहा हूँ। और मुझे सहानुभूतिवश भी उसकी सेवा करनी होगी, नहीं तो वह सचमुच मर ही जाएगा...



वह अपने मन में पिछले अनुभवों के बारे में सोच रहा था— “मैं तो अपने-आप को बड़ा अमीर मान रहा था। मैं सोचता था कि मेरे पास एक ऐसा अनोखा फूल है, जो और कहीं नहीं है। पर वह तो साधारण गुलाब ही निकला। मेरे ज्वालामुखी पहाड़ भी इतने छोटे हैं, जो मेरे घुटने तक ही आते हैं और उनमें से एक तो शायद हमेशा के लिए ठंडा हो चुका है। इन ज्वालामुखियों से और एक साधारण गुलाब से मैं एक महान



राजकुमार नहीं बन सकता...।” यह सोचते-सोचते वह घास पर लेट गया और खूब रोया।



21

इसी समय एक लोमड़ी वहाँ आ पहुँची।

उसने नन्हे राजकुमार को नमस्ते की। उसने भी नम्रतापूर्वक नमस्ते की। पर जब उसने घूमकर देखा तो उसे कुछ नहीं दिखाई दिया।

उसे आवाज़ सुनाई दी—

“मैं यहाँ हूँ, यहाँ सेब के पेड़ के नीचे।”

नन्हें राजकुमार ने कहा— “तुम कौन हो? तुम तो बड़ी सुंदर हो।”

लोमड़ी ने कहा— “मैं लोमड़ी हूँ।”

नन्हे राजकुमार ने सुझाया— “आओ मेरे साथ खेलो, मैं बड़ा उदास हूँ।”

लोमड़ी ने कहा— “मैं तुम्हारे साथ नहीं खेल सकती। मैं पालतू नहीं हूँ।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “ओह, माफ़ करना।”

थोड़ा और सोचने के बाद उसने कहा— “पालतू किसे कहते हैं?”

लोमड़ी ने पूछा— “तुम यहाँ आस-पास के नहीं लगते हो। यहाँ क्या खोज रहे हो?”





नन्हे राजकुमार ने कहा— “मैं मनुष्यों को खोज रहा हूँ। पालतू किसे कहते हैं?”

लोमड़ी बोली— “मनुष्य! अरे उनके पास तो बंदूक होती है और वे शिकार करते हैं। उनके कारण बड़ी परेशानी होती है। वे मुर्गियाँ पालते हैं और उनको केवल उसी में रुचि होती है। क्या तुम भी मुर्गियाँ चाहते हो?”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “नहीं, मैं तो दोस्तों की खोज में हूँ। पालतू किसे कहते हैं?”

लोमड़ी ने कहा— “वह ऐसी क्रिया है जिसकी अकसर उपेक्षा की जाती है। उसका अर्थ है— रिश्ता कायम करना।”

“क्या? रिश्ता कायम करना?”

लोमड़ी ने कहा— “हाँ, बिल्कुल वही। उदाहरण के लिए— तुम मेरे लिए सैकड़ों-हज़ारों दूसरे लड़कों जैसे ही हो। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। और तुम्हें मेरी आवश्यकता नहीं है। मैं भी तुम्हारे लिए सैकड़ों-हज़ारों लोमड़ियों से कुछ अलग नहीं हूँ। किंतु अगर तुम मुझे पाल लो तो हमें एक-दूसरे की आवश्यकता महसूस होगी। मेरे लिए तुम दुनिया में सबसे अनोखे दिखोगे और मैं भी तुम्हें दुनिया में सबसे अनोखी दिखूँगी।”



नन्हे राजकुमार ने कहा— “मैं कुछ-कुछ समझ रहा हूँ। एक फूल है... मुझे लगता है कि मैं उसका पालतू बन गया हूँ।”

लोमड़ी ने कहा— “यह संभव है। पृथ्वी पर कितनी ही तरह की चीजें देखने में आती हैं।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “अरे, लेकिन यह बात पृथ्वी की नहीं है।”

लोमड़ी अर्चभित और उत्सुक हो गई। उसने पूछा— “यह बात क्या किसी दूसरे ग्रह की है?”

“हाँ।”

“क्या उस ग्रह पर शिकारी हैं?”

“नहीं।”

लोमड़ी बोली— “यह तो बड़ी मजेदार बात है। वहाँ मुर्गियाँ हैं?”

“नहीं हैं।”

लोमड़ी ने लंबी साँस लेते हुए कहा— “कुछ भी पूरी तरह से हमारे मन के मुताबिक नहीं होता।” उसने अपनी बात कहनी शुरू की—

“मेरा जीवन बड़ा ही नीरस है। मैं मुर्गियों का शिकार करती हूँ और मनुष्य मेरा शिकार करते हैं। सभी मुर्गियाँ एक जैसी होती हैं और सभी मनुष्य भी एक जैसे ही होते हैं। इसलिए अब मैं ऊब चुकी हूँ। किंतु अगर तुम मुझे पालतू बना लो तो मेरे जीवन में रौनक लौट आएगी। मेरे लिए तुम्हारे कदमों की आहट बाकी सब लोगों के कदमों की आहट से अलग होगी। दूसरों के कदमों की आहट सुनकर मैं छुप जाती हूँ, लेकिन तुम्हारे कदमों की आहट मुझे संगीत की तरह सुनाई देगी, जिसे सुनकर मैं अपने छिपने की जगह से बाहर चली आऊँगी। दूर उन गेहूँ के खेतों को देखते हो? मैं तो रोटी नहीं खाती। मेरे लिए गेहूँ के खेतों का कोई महत्त्व नहीं है। गेहूँ के खेत मुझे कोई संदेश भी नहीं देते, जोकि दुःख की बात है। लेकिन तुम्हारे बाल सुनहरे हैं। उन खेतों में गेहूँ की बालों का रंग भी सुनहरा है। ज़रा सोचो तो, जब तुम



मुझे पालतू बना लोगे, तो उन सुनहरे खेतों को देखकर मुझे तुम्हारी याद आएगी और गेहूँ के खेतों में बहती हुई हवा का संगीत मुझे बहुत प्यारा लगेगा...”

लोमड़ी नन्हे राजकुमार को बहुत देर तक निहारती रही।

उसने कहा— “कृपया मुझे पाल लो।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “मैं तो बहुत चाहता हूँ कि तुम्हें पाल लूँ। किंतु मेरे पास समय कम है, दोस्त खोजने हैं। और अनेक चीजें देखनी-समझनी हैं।”

लोमड़ी ने कहा— “किंतु समझा उसी को जा सकता है, जिसे पाला जाए। मनुष्यों के पास कुछ भी समझने के लिए समय नहीं है। वे तो बनी-बनाई चीजें दुकान से खरीद लेते हैं। किंतु कहीं भी ऐसी दुकान नहीं है, जिससे दोस्ती खरीदी जा सके। इसलिए मनुष्यों के अब दोस्त होते ही नहीं हैं। अगर तुम दोस्त चाहते हो, तो मुझे पाल लो...”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “तुम्हें पालने के लिए क्या करना होगा?”

लोमड़ी ने उत्तर दिया— “उसके लिए तुम्हें सब्र रखना होगा। पहले मुझसे कुछ हटकर बैठना, इस प्रकार घास पर। मैं तुम्हें तिरछी नज़र से देखूँगी, पर तुम कुछ नहीं बोलोगे। शब्द गलतफहमी की जड़ होते हैं। फिर रोज थोड़ा-थोड़ा नज़दीक आकर बैठोगे।”

नन्हा राजकुमार अगले दिन फिर वहाँ आया।

लोमड़ी ने कहा— “अच्छा हो कि रोज एक ही समय पर आया करो। क्योंकि मान लो तुम दोपहर को चार बजे आते हो, तो तीन बजे से ही मुझे अच्छा लगने लगेगा। और ज्यों-ज्यों चार बजने वाले होंगे, मेरी खुशी उतनी ही बढ़ती जाएगी। चार बजते ही मैं बेचैनी और परेशानी में इधर-उधर कूदूँगी। और तुम्हारे आते ही तुम्हें दिखाऊँगी कि मैं कितनी खुश हूँ। पर अगर तुम अनिश्चित समय पर आओगे, तो मुझे यह पता ही नहीं चलेगा कि तुम्हारा स्वागत करने के लिए मुझे कब तैयार होना है। आखिर उचित विधि माननी पड़ती है न...”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “विधि क्या होती है?”

लोमड़ी ने कहा— “यह भी ऐसी बात है, जिसकी अकसर उपेक्षा की





तुम दोपहर को चार बजे आते हो,
तो तीन बजे से ही मुझे अच्छा लगने लगेगा...

नन्हा राजकुमार : 60



जाती है। विधि वह चीज़ है जो एक दिन को दूसरे दिनों से निराला बनाती हैं। एक क्षण को दूसरे क्षणों से निराला बनाती है। एक उदाहरण दूँ— जो मेरा शिकार करते हैं, उनकी एक विधि होती है। हर गुरुवार को वे लोग गाँव की लड़कियों के साथ नाच करते हैं। इसलिए गुरुवार मेरे लिए बड़े आनंद का दिन होता है! उस दिन मैं अंगूर के बागों तक घूमने जा सकती हूँ। किंतु अगर ये शिकारी यह नाच हमेशा अलग-अलग समय पर करेंगे तो हर दिन मेरे लिए तो एक समान ही रहेगा। मुझे कभी भी छुट्टी नहीं मिलेगी।”

इस प्रकार नन्हे राजकुमार ने लोमड़ी को पाल लिया। और जब उसके चले जाने का क्षण नज़दीक आया तो लोमड़ी ने कहा— “अरे, तुम चले जाओगे तो मैं रोऊँगी।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “कसूर तो तुम्हारा ही है। मैंने तो कभी भी तुम्हारा नुकसान नहीं करना चाहा, पर तुमने ही चाहा था कि मैं तुम्हें पालूँ।”

लोमड़ी ने कहा— “हाँ, बात तो यही है।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “लेकिन तुम तो अब रोने लगोगी!” लोमड़ी बोली— “हाँ, बात तो यही है।” नन्हे राजकुमार ने कहा— “तो फिर इससे तुम्हारा कोई लाभ नहीं हुआ।”

लोमड़ी ने कहा— “इससे मेरा बड़ा लाभ हुआ है। क्योंकि गेहूँ के खेत का रंग...” कुछ रुककर उसने फिर कहा— “तुम अब जाकर उन गुलाबों को देखो, तो समझ जाओगे कि तुम्हारा गुलाब जगत् में सबसे निराला है। उसके बाद मेरे पास विदा लेने के लिए आना। तब मैं तुम्हें एक रहस्य बताऊँगी।”

नन्हा राजकुमार फिर-से गुलाबों को देखने चला गया।

फूलों को देखकर उसने कहा— “तुम मेरे फूल जैसे बिलकुल भी नहीं हो। अभी तो तुम कुछ भी नहीं हो। तुम्हें किसी ने पाला भी नहीं और तुमने भी किसी को पालतू नहीं बनाया। तुम मेरे लिए ऐसे ही हो, जैसी मेरी वह लोमड़ी थी। जब पहली बार मैंने उसे देखा था, वह दूसरी सैकड़ों-हज़ारों लोमड़ियों की तरह एक लोमड़ी थी। किंतु अब उसके साथ मेरी दोस्ती हो गई है, अब वह सारे संसार में सबसे अनोखी है।”

यह सुनकर फूल बड़े शर्मिदा हो गए।

किंतु राजकुमार अपनी बात कहता गया। उसने कहा— “तुम सुंदर तो हो,



किंतु तुम्हारे अंदर सार नहीं है। तुम्हारे लिए कोई मरने नहीं जाएगा। आम मुसाफिर जब पहली बार तुम्हें देखेगा, तो सोचेगा कि तुम मेरे फूल जैसे ही हो— मेरे उसी गुलाब की तरह जो मेरे ग्रह पर है। किंतु अपने-आप में वह सैकड़ों गुलाबों से भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसे मैंने सींचा है। उसकी रक्षा मैंने काँच के ग्लोब से ढक कर की है, उसे परदा लगाकर हवा के झोकों से बचाया और उसके कारण ही मैंने इल्लियों को मार डाला था— (केवल दो-तीन ही बाकी रखीं थी, यह सोचकर कि उनकी तितलियाँ बनेंगी) क्योंकि जब वह क्रोध करता था या अभिमान करता था, तो मैं उस पर अधिक ध्यान देता था। जब वह चुप भी रहता था, तब भी मैं उस पर ध्यान देता था। यह सब इसीलिए कि वह मेरा फूल है।”

इसके बाद वह लोमड़ी के पास वापस चला गया।

उसने लोमड़ी से कहा— “अलविदा।”

लोमड़ी बोली— “अलविदा, तो यह लो रहस्य, जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था। रहस्य बिलकुल सरल है। केवल हृदय से ही बातों को ठीक-ठीक समझा जा सकता है, जो सारपूर्ण है वह आँखों से नहीं दिखता।”

नन्हे राजकुमार ने वह वाक्य दोहराया, ताकि उसे याद रहे— “जो सारपूर्ण है, वह आँखों से नहीं दिखता।”

लोमड़ी बोली— “अपने गुलाब के लिए जो समय तुमने लगाया है, उसी के कारण वह तुम्हारे लिए इतना महत्वपूर्ण है।”

जिससे कि अच्छी तरह याद रहे, नन्हे राजकुमार ने फिर दोहराया— “अपने गुलाब के लिए जो समय मैंने लगाया है, इसीलिए वह इतना महत्वपूर्ण है।”

लोमड़ी ने कहा— “मनुष्य इस सत्य को भूल गया है, किंतु तुम मत भूलना। जिसको तुमने पालतू बनाया है, उसकी जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर हमेशा के लिए आ गई है। तुम्हारे गुलाब के फूल की जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।”

याद रखने के लिए, नन्हे राजकुमार ने दोहराया— “मेरे गुलाब की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है।”



आगे चलकर नन्हे राजकुमार को एक रेल सिग्नल चौकी का चौकीदार मिला। नन्हें राजकुमार ने उसे नमस्ते की। चौकीदार ने भी कहा— “नमस्ते।”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “तुम यहाँ क्या करते हो?”

“मैं मुसाफ़िरों की छँटनी करता हूँ। हज़ारों को छँटता हूँ। जिन रेलगाड़ियों में वे आते हैं, उनको इधर-उधर दिशा दिखाता हूँ। किसी को दाएँ भेजता हूँ, किसी को बाएँ।”

तभी एक ट्रेन, जो बत्तियों से चमक रही थी, धड़धड़ाते हुए चौकीदार के सिग्नल घर को कँपाती हुई दौड़ी चली गई।

नन्हे राजकुमार ने कहा— “वे लोग बड़ी जल्दी में लगते हैं। किस खोज में हैं वे लोग?” सिग्नल चौकीदार ने कहा— “यह तो इंजन के इंजीनियर को भी नहीं मालूम।”

और इसी समय एक दूसरी ट्रेन उल्टी दिशा में धड़धड़ाती हुई चली गई।

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “क्या इतनी जल्दी वे लोग वापस भी चले गए?”

चौकीदार ने कहा— “नहीं। ये दूसरे लोग थे। दूसरी दिशा में जाने वाले।”

नन्हे राजकुमार ने पूछा— “वे जहाँ थे, वहाँ रहने में उन्हें संतोष नहीं था क्या?”

चौकीदार ने कहा— “जो जहाँ रहता है, वह वहाँ कभी भी संतुष्ट नहीं रहता।”

फिर-से एक तीसरी चमकती हुई एक्सप्रेस रेलगाड़ी धड़धड़ाती हुई गुज़र गई। नन्हे राजकुमार ने पूछा— “क्या ये लोग पहली गाड़ी वाले यात्रियों का पीछा कर रहे हैं?”

चौकीदार ने कहा— “वे लोग कुछ भी नहीं कर रहे हैं। वे सो रहे हैं और जो सो नहीं रहे हैं, वे जँभाई ले रहे होंगे। केवल बच्चे जगे होंगे और खिड़की के काँच से नाक सटाकर बाहर देख रहे होंगे।”



नन्हे राजकुमार ने कहा— “केवल बच्चे ही जानते हैं कि वे क्या देखना चाहते हैं। वे एक चीथड़ों से बनी हुई गुड़िया के पीछे समय बरबाद करते हैं, जो उनके लिए बड़ी महत्वपूर्ण चीज़ बन जाती है। और अगर कोई उनसे वह गुड़िया छीन ले, तो वे रोने लगते हैं...”

चौकीदार बोला— “बच्चे बड़े भाग्यशाली होते हैं।”

23

फिर उसे एक दुकानदार मिला। दोनों ने एक-दूसरे को अभिवादन किया। वह दुकानदार ऐसी गोलियाँ बेचता था, जिनका आविष्कार प्यास बुझाने के लिए किया गया था। एक गोली खा लो तो हफ्ते भर तक कुछ पीने की आवश्यकता नहीं होती।



नन्हे राजकुमार ने पूछा— “तुम ये गोलियाँ क्यों बेचते हो?”

उसने जवाब दिया— “इनसे बहुत समय बचता है। विशेषज्ञों ने हिसाब करके बताया है कि इनका इस्तेमाल करने से एक हफ्ते में तिरेपन मिनट समय की बचत होती है।”



“तो फिर उन बचे हुए तिरेपन मिनटों का मैं क्या करूँगा?”

“जो चाहो करो...”

नन्हे राजकुमार ने मन-ही-मन अपने-आप से कहा— “अगर मेरे पास तिरेपन मिनट मनचाहे ढंग से खर्च करने के लिए हों, तो मैं फुरसत के वक्त किसी पानी के झरने की ओर जाना पसंद करूँगा।”



मेरे हवाई जहाज़ की दुर्घटना के बाद यह आठवाँ दिन था। जब इस दुकानदार की कहानी सुनी, तब मैं अपने पास बचे हुए पीने के पानी का आखिरी घूंट पी रहा था।

मैंने नन्हे राजकुमार से कहा— “तुम्हारी ये स्मृति-कथाएँ बड़ी मनमोहक हैं, किंतु अपने हवाई जहाज़ को तो मैं अभी तक सुधार नहीं पाया। मेरे पास पीने का पानी बिलकुल भी नहीं रहा। काश! मैं भी फुरसत से किसी पानी के झरने के पास जा पाता।”

नन्हा राजकुमार बोला— “मेरी दोस्त लोमड़ी ने तो...”

मैंने उससे कहा— “मेरे प्यारे नन्हें लड़के, इस बात का लोमड़ी से अब कोई मतलब नहीं रहा।”

राजकुमार ने कहा— “क्यों नहीं रहा?”

“क्योंकि मैं तो प्यास से मरा जा रहा हूँ।”

नन्हा राजकुमार मेरी बात नहीं समझा। उसने कहा— “दोस्त पाना बड़ी ही अच्छी बात है, चाहे ऐसा मरते समय ही क्यों न हो। मैं तो एक लोमड़ी को दोस्त के रूप में पाकर बड़ा खुश हुआ।”

मैंने मन-ही-मन अपने से कहा— “नन्हा राजकुमार इस खतरे को नहीं समझ रहा है। उसे तो कभी भी भूख या प्यास नहीं लगती। केवल थोड़ा सूर्य का प्रकाश ही चाहिए...”

किंतु उसने मेरी तरफ़ एकटक ताका और मेरे मन की बात का उत्तर दिया— “मुझे भी प्यास लगी है। चलो कहीं कुँआ खोजें।”



मैंने थकान का भाव दिखाया। भला इतने बड़े इस रेगिस्तान में कहीं ऐसे ही कुँआ मिलेगा? फिर भी हम दोनों निकल पड़े।

कई घंटों तक चलते-चलते हम थक चुके थे, शांत संध्या का अंधकार छा गया था और आकाश में सितारे चमकने लगे थे। प्यास के कारण मुझे कुछ बुखार जैसा लग रहा था। तारों की तरफ़ मैं ऐसे देख रहा था कि जैसे मैं स्वप्न में हूँ। नन्हे राजकुमार के आखिरी शब्द मेरी स्मृति में गूँज उठे।

मैंने पूछा— “तो, तुम्हें भी प्यास लगी है?”

उसने मेरे प्रश्न का तो उत्तर नहीं दिया, केवल इतना कहा— “पानी शायद हृदय के लिए भी अच्छा होगा...”

मैं इस उत्तर को समझ नहीं पाया, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। मैं समझ चुका था कि उससे सवाल करना व्यर्थ है।

वह थककर बैठ गया था। उसके पास मैं भी बैठ गया। कुछ देर चुप रहने के बाद वह फिर बोला— “उस फूल के कारण जो दिखता नहीं है, तारे सुंदर लगते हैं।”

मैंने उत्तर दिया— “हाँ, बात तो ठीक है।” मैंने और कुछ नहीं कहा और चाँदनी में फैली हुई रेत की लहरों को देखने लगा।

नन्हा राजकुमार बोला— “रेगिस्तान बड़ा सुंदर है।”

बात सच थी। मुझे रेगिस्तान हमेशा ही प्यारा लगा है। रेगिस्तान में रेत के टीले पर बैठ जाइए। न कुछ सुनाई देता है न दिखाई देता है। फिर भी उस शांत वातावरण में कुछ स्पंदन होते हैं, कुछ आलोकित होता है...

नन्हा राजकुमार बोला— “जो चीज़ रेगिस्तान को सुंदर बनाती है, वह है उसमें कहीं छिपा हुआ कोई कुँआ।”

उसके इस रेगिस्तान के रहस्यमय बोध को देखकर मैं अचंभित हो गया। जब मैं बालक था, तब एक पुराने घर में रहता था। उस घर के बारे में एक दंतकथा प्रचलित थी कि उसमें एक खज़ाना दबा पड़ा है। सच है कि किसी को मालूम नहीं था कि उसे कैसे ढूँढ़ा जाए। किंतु उसके कारण उस घर के बारे में एक आकर्षण हो गया था। मेरे घर ने अपने हृदय की गहराई में एक रहस्य छिपा रखा था।



मैंने नन्हे राजकुमार से कहा— “हाँ। घर हो, तारे हों या रेगिस्तान हो, इन्हें जो वस्तु सुंदर बनाती है, वह आँखों से नहीं दिखती।”

“मुझे खुशी है कि तुम मेरी दोस्त लोमड़ी के विचार से सहमत हो।”

चूँकि नन्हे राजकुमार को नींद आ रही थी। मैंने उसे अपने हाथों में उठा लिया और फिर एक ओर चलने लगा। मेरा दिल भर आया और मैं गदगद हो गया। मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे हाथ में कोई अत्यंत कोमल अमूल्य वस्तु है। मुझे ऐसा लग रहा था कि इससे अधिक क्षणभंगुर वस्तु दुनिया में और कुछ नहीं है। चाँदनी में उसके फीके मस्तक को, उसकी बंद आँखों को उसके उन घुंघराले बालों को, जो हवा में काँपते थे, देखकर मैंने मन-ही-मन कहा— “जो मुझे यहाँ दिख रहा है, वह तो आवरण ही है। जो सचमुच महत्वपूर्ण है वह तो आँखों को दिखता नहीं है।”

उसके ओंठ थोड़े से खुले तो एक अर्द्ध-मुसकान की शंका हुई। मैंने मन-ही-मन अपने को कहा— “इस सोते हुए नन्हे राजकुमार की जो बात मेरे मन को भर देती है, वह है— उसकी एक गुलाब के फूल के प्रति वफ़ादारी। उस गुलाब का प्रतिबिंब इसके सारे व्यक्तित्व में, सोते हुए भी, दीप की लौ के समान झलकता है।”

यह सोचते-सोचते मुझे वह और अधिक कोमल और क्षणभंगुर लगने लगा। मुझे उसकी रक्षा करने की आवश्यकता महसूस हुई, क्योंकि मुझे लगा कि वह स्वयं एक दिए की लौ ही है, जो हवा की समान्य फूँक से बुझ सकती है।

मैं इस तरह चलता रहा और पौ फटते ही एक कुँए के पास जा पहुँचा।



नन्हे राजकुमार ने कहा— “आदमी तेज़ रेलगाड़ियों में बैठकर निकल पड़ते हैं, किंतु क्या चाहते हैं, यह उन्हें मालूम नहीं। फिर वे इधर-उधर दौड़ते हैं, उत्तेजित होते हैं और चक्कर काटते रहते हैं... इस परेशानी से लाभ कुछ भी नहीं होता।”





वह हँसा और उसने घिरनी को घुमाया...

नन्हा राजकुमार : 68



जिस कुँए के पास हम पहुँचे थे, वह सहारा रेगिस्तान के कुँओं जैसा बिलकुल भी नहीं था। सहारा के कुँए तो कच्चे, रेत में खुदे हुए गड्ढों के जैसे दिखते हैं। यह एक गाँव के कुँए जैसा था। किंतु यहाँ तो कोई गाँव नहीं था। सब स्वप्न जैसा ही लग रहा था।

मैंने नन्हे राजकुमार से कहा— “बड़ा विचित्र है। सब कुछ तैयार है— घिरनी, बाल्टी, रस्सी...”

वह हँसा और उसने घिरनी को घुमाया। घिरनी ने आवाज़ की, किसी पुराने हवासू चक्र यंत्र की तरह जिसे बहुत दिनों से हवा भी भूल चुकी हो।

नन्हे राजकुमार ने कहा— “सुन रहे हो? हमने कुँए को जगा दिया। वह गा रहा है...”

मैं नहीं चाहता था कि वह पानी खींचकर थक जाए।

इसलिए मैंने कहा— “छोड़ो, मैं खींचता हूँ। तुम्हारे लिए वह अधिक भारी है।”

मैंने बाल्टी खींचकर धीरे से कुँए के किनारे पर रख दी। थक तो गया था, किंतु अपनी कार्यपूर्ति के कारण मैं आनंद महसूस कर रहा था। घिरनी का गान अभी भी मेरे कानों में गूँज रहा था। सूर्य की किरणें काँपते हुए पानी के ऊपर नाच रही थीं।

नन्हे राजकुमार ने कहा— “मैं इस पानी का प्यासा हूँ, थोड़ा पीने को दो...”

मैं समझ गया कि वह किस चीज़ की खोज में था।

मैंने बाल्टी उठाकर उसे पानी पिलाया। उसने आँखें मूँदकर पानी पिया। यह पानी साधारण से बिलकुल अलग था। इस पानी की मिठास के पीछे थी सितारों के नीचे की वह यात्रा, घिरनी का संगीत और मेरा परिश्रम। वह हृदय के लिए एक भेंट की तरह ही उत्तम था। मैं जब बालक था, तब क्रिसमस वृक्ष के दीप, गिरजाघर का मध्य रात्रि का संगीत, मुसकराते हुए चेहरों की मृदुता, मेरी क्रिसमस में मिली भेंटों को दीप्तिमान कर देते थे।

नन्हे राजकुमार ने कहा— “जहाँ तुम रहते हो, वहाँ मनुष्य एक ही बगीचे में पाँच हजार गुलाब उगाते हैं, किंतु फिर भी उन्हें वह नहीं मिलता जो वे चाहते हैं।”

मैंने उत्तर दिया कि उन्हें जो चाहिए, नहीं मिलता है।



नन्हे राजकुमार ने कहा— “जो वे चाहते हैं वह तो एक फूल से ही मिल सकता है, थोड़े से पानी से ही मिल सकता है।”

मैंने कहा कि बात सच है।

नन्हे राजकुमार ने फिर कहा— “आँखें अंधी होती हैं। हृदय से देखना चाहिए...”

मैं पानी पी चुका था। अब आराम से साँस ले रहा था। सूर्योदय के समय रेत का रंग मधु जैसा होता है। मधु का वह रंग भी मुझे आनंद दे रहा था। फिर किस चीज़ ने मुझे उदास बना दिया था?

नन्हा राजकुमार फिर—से मेरी बगल में बैठ गया। उसने मृदुता के साथ मुझसे कहा— “तुम्हें अपना वायदा पूरा करना चाहिए।”

“कौन-सा वायदा?”

“वह मोहरी, मेरी भेड़ के लिए। याद नहीं? जानते हो न— उस फूल की जिम्मेदारी मेरी है।”

अपनी जेब से मैंने स्कैच निकाले। नन्हे राजकुमार ने सब चित्र देखे। और हँसते हुए उसने कहा— “तुम्हारी गोरक्षी— वह तो पत्ता गोभी जैसी दिखती है।”
“ऐसा!”

मैं तो अपने गोरक्षी के चित्रों के बारे में गर्व कर रहा था।

वह फिर हँसा और कहने लगा— “तुम्हारी लोमड़ी के कान तो सींग जैसे दिखते हैं और कितने लंबे हैं।” वह फिर हँस पड़ा।

मैंने उससे कहा— “नन्हे राजकुमार, तुम तो मुझ पर अन्याय कर रहे हो। मैं तो शाखा-अजगर के बाहर और भीतर के चित्र के सिवाए और किसी चीज़ का चित्र बनाना नहीं जानता।”

नन्हे राजकुमार ने कहा— “कोई बात नहीं। बच्चे समझते हैं।”

तब मैंने पेंसिल से एक मोहरी का चित्र बना दिया। भारी मन से यह चित्र नन्हे राजकुमार को देते हुए मैंने कहा— “तुम्हारी योजनाएँ मैं नहीं जानता।”

उसने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया। उसके बदले मुझसे कहा, “जानते हो— कल मेरे पृथ्वी पर उतरने की सालगिरह होगी।”

कुछ देर चुप रहने के बाद उसने फिर कहा— “मैं करीब-करीब इसी जगह उतरा था।”



यह कहकर उसका चेहरा झेंप से लाल हो गया।

एक बार फिर न जाने क्यों मेरा मन उदास हो गया। मेरे मन में एक प्रश्न उठा— “तो यह अचानक नहीं हुआ कि तुम उस सुबह, एक सप्ताह पहले, मुझसे मिले, इधर-उधर घूमते-घूमते, बिलकुल अकेले, किसी बस्ती से हज़ार मील दूर, तुम अपनी उतरने की जगह पर वापस लौट रहे थे?”

नन्हे राजकुमार का चेहरा फिर-से लाल हो गया।

मैंने कुछ संकोच के साथ कहा— “शायद पृथ्वी पर उतरने की वर्षगाँठ के कारण?”

उसका चेहरा फिर से लाल हो गया। उसने कभी भी प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया। किंतु क्या यह सच नहीं है कि झेंप से लाल हो जाने का अर्थ ‘हाँ’ ही होता है?

मैंने उससे कहा— “मुझे कुछ डर लग रहा है।”

किंतु उसने मुझे बीच में ही रोककर कहा— “अब तुम्हें अपना काम करना चाहिए। तुम्हें अपने इंजन के पास वापस जाना चाहिए। कल शाम यहाँ आना। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा...”

मेरा डर नहीं गया था। मुझे लोमड़ी की याद आई। जब कोई स्वयं को पालतू बना देता है, तो रोने की भी तैयारी रखता है... जब हम किसी के पालतू हो जाते हैं, तो उससे बिछड़ने पर रोने के लिए भी तैयार रहना पड़ता है।



कुएँ के नज़दीक एक पुरानी पत्थर की दीवार के खंडहर थे। जब अगले दिन शाम को मैं अपने काम पर से वापस वहाँ गया, तो थोड़ी दूर से मैंने नन्हे राजकुमार को उस दीवार पर पैर लटकाए बैठे देखा। मैंने उसे यह कहते हुए सुना—

“तो फिर, तुम्हें याद नहीं है। यह वही स्थान नहीं है।”

किसी आवाज़ ने उसे उत्तर दिया होगा, जिसके उत्तर में उसने कहा— “हाँ। हाँ। दिन तो ठीक वही है, किंतु स्थान वह नहीं है।”



मैं दीवार के नज़दीक चलता गया, किंतु मैंने न तो किसी को देखा और न कुछ सुना। किंतु नन्हे राजकुमार ने फिर-से किसी को उत्तर दिया— “ठीक है। तुम्हें रेत पर मेरे रास्ते के निशान दिखाई देंगे, जहाँ से वे शुरू हुए हैं। तुम्हें कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। केवल मेरा इंतज़ार करना। मैं आज रात को वहाँ पहुँच जाऊँगा।

दीवार से मैं केवल बीस मीटर ही दूर था, पर मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। कुछ देर बाद नन्हा राजकुमार फिर बोला—

“तुम्हारा विष तो असरदार है? तुम्हें यकीन है न कि उससे मुझे अधिक देर तक कष्ट नहीं होगा।”

मैं सहमकर रुक गया। मेरा हृदय तेज़-तेज़ धड़कने लगा, किंतु मैं कुछ समझ न पाया।

नन्हे राजकुमार ने कहा—

“अब चले जाओ। मैं दीवार से उतरना चाहता हूँ।”

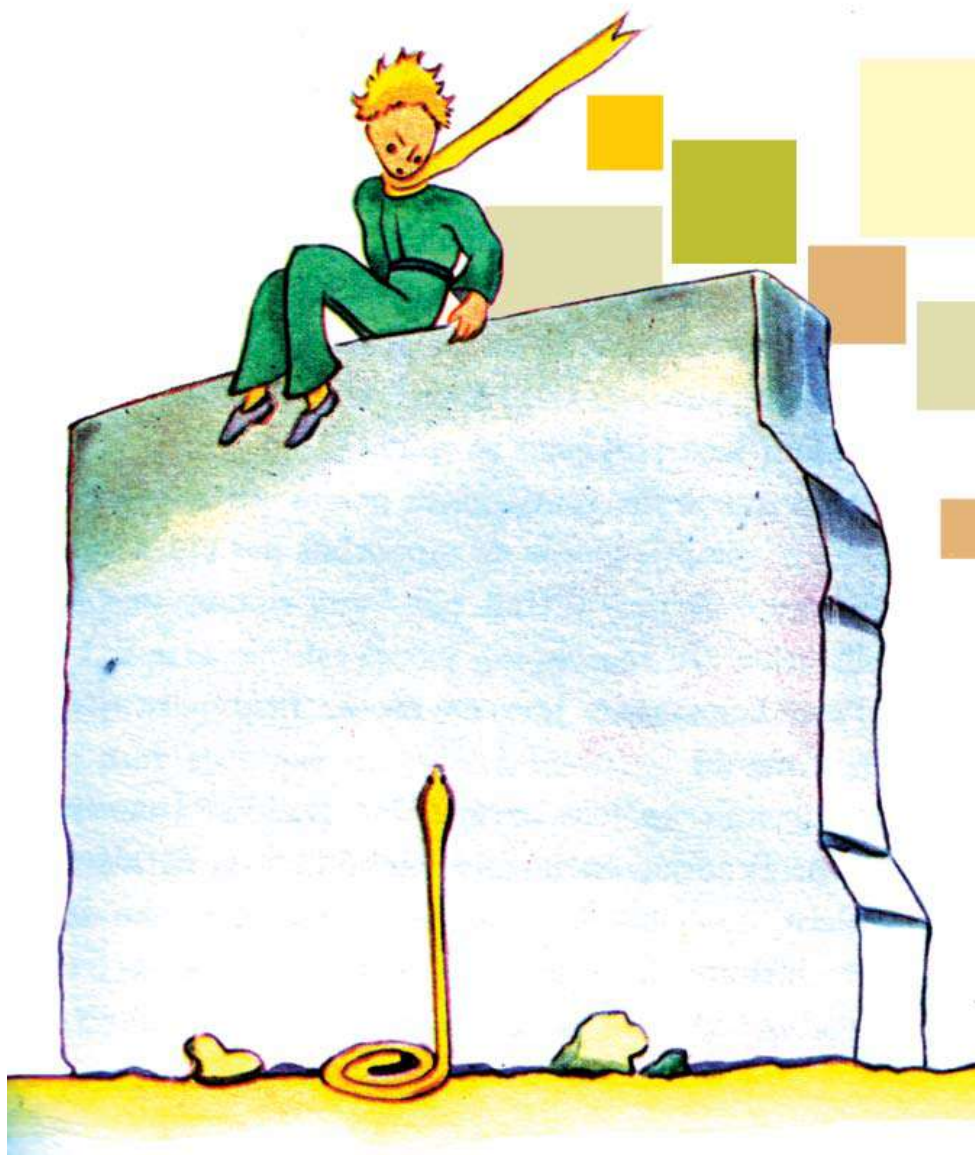
यह सुनते ही मैंने दीवार के नीचे नज़र डाली। देखते ही मैं डर के मारे उछल पड़ा। मैंने देखा कि एक पीला साँप, नन्हे राजकुमार की तरफ़ फन उठाए बैठा है। यह ऐसा साँप था, जिसके काटने से तीस सेकंड में ही प्राण चले जाते हैं। जब से अपनी रिवॉल्वर निकालने के लिए मैं एक कदम पीछे हटा। किंतु मेरे आवाज़ करने के कारण साँप रेत में से होते हुए ऐसे चला गया कि जैसे अदृश्य होती हुई जल की धारा फव्वारे में समा गई हो। साँप बिना किसी जल्दबाज़ी के पत्थरों में गायब हो गया।

मैं दीवार के पास ठीक समय पर पहुँच गया और मैंने अपने नन्हे राजकुमार को अपनी बाहों में लपक लिया। उसका चेहरा बर्फ़ की तरह सफेद हो गया था।

मैंने उससे पूछा— “इसका क्या मतलब? तुम साँपों से क्यों बोलते हो?”

उसके सुनहरी गलेबंद को, जो वह हमेशा पहने रखता था, मैंने ढीला कर दिया था। मैंने उसके मस्तक को गीला कर दिया था और उसे पानी भी पिला दिया था। इसके बाद मुझे और प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं हुई। उसने मेरी तरफ़ गंभीरतापूर्वक देखा और मेरे गले में अपनी दोनों बाहें डाल दीं। उसका हृदय किसी मरती हुई चिड़िया की तरह धड़क रहा था, जो किसी की बंदूक का शिकार हो चुकी हो...





“अब चले जाओ। मैं दीवार से उतरना चाहता हूँ”

नन्हा राजकुमार : 73



उसने कहा— “मुझे खुशी है कि तुम्हें पता चल गया है कि तुम्हारे इंजन में क्या गड़बड़ थी। अब तुम घर लौट सकते हो...”

मैंने उससे पूछा— “तुम्हें कैसे पता चला?”

मैं उसे यही बताने आ रहा था कि मेरा कार्य सफलतापूर्वक समाप्त हो चुका है, ऐसी सफलता के साथ जिसकी मैंने कभी आशा भी नहीं की थी।

उसने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, किंतु कहा— “मैं भी आज घर वापस जा रहा हूँ...”

फिर उसने दुख के साथ कहा— “किंतु वह बड़ा दूर है और वहाँ पहुँचना कठिन भी बहुत...”

मैं समझ गया था कि कुछ असाधारण घटने वाला है। मैंने नन्हे राजकुमार को एक बच्चे की तरह अपनी बांहों में उठाया हुआ था, तो भी मुझे लग रहा था कि वह किसी ऐसे रसातल में जा रहा है, जहाँ से उसे रोकना मेरे लिए संभव नहीं था।



उसका चेहरा दूर कहीं खोए हुए व्यक्ति की तरह गंभीर हो गया था। उसने कहा— “मेरे पास तुम्हारी भेड़ है, उसका डिब्बा है और मोहरी भी।” उसने मुझे एक उदास मुस्कराहट से देखा।

मैं बहुत देर तक इंतजार करता रहा। मैं देख रहा था कि उसकी हालत धीरे-धीरे सुधर रही थी।

मैंने उससे कहा— “मेरे प्यारे नन्हे राजकुमार, तुम डर रहे हो...”



वह सचमुच डर रहा था, किंतु उसने एक हल्की हँसी, हँसी। उसने कहा— “आज शाम को मुझे और भी डर लगेगा।”

फिर-से एक बार ऐसी परिस्थिति को महसूस करके, जिसे मैं सुधार नहीं सकता था, मैं सुन्न हो गया। मैं जानता था कि फिर कभी उस हँसी को न सुनना, यह विचार मेरे लिए कितना असह्य हो जाएगा। वह हँसी मेरे लिए रेगिस्तान में पानी के किसी झरने के समान थी।

मैंने कहा— “प्यारे नन्हे राजकुमार, मैं तुम्हारी हँसी फिर-से सुनना चाहता हूँ।”

किंतु उसने कहा— “आज रात को एक वर्ष हो जाएगा। एक साल पहले पृथ्वी पर जहाँ मैं उतरा था, ठीक उसी के ऊपर मेरा तारा दिखाई देगा।”

मैंने कहा— “प्यारे राजकुमार, कह दो कि यह साँप की बात, उससे मिलने की जगह की बात और यह तारे की बात सब स्वप्न हैं।”

उसने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया, किंतु कहा— “जो सचमुच महत्वपूर्ण है वह आँखों से दिखाई नहीं देता।”

“हाँ, मैं जानता हूँ।”

“जैसी बात फूल की है यह भी वैसी ही है। अगर तुम किसी ऐसे फूल को प्यार करते हो जो किसी सितारे पर रहता है, तो तुम्हें रात को सितारे प्यारे लगेंगे। सारे सितारे फूलों से भरे हुए दिखेंगे।”

मैंने कहा— “हाँ, मैं जानता हूँ।”

“पानी वाली बात भी वही है— उस घिरनी और रस्सी की मदद से खींचकर जो पानी तुमने मुझे पीने को दिया था, वह संगीत जैसा ही था। याद है न, वह कितना अच्छा था?”

“मैं जानता हूँ।”

“और रात को तुम सितारों को देखोगे। जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ सब चीजें इतनी छोटी हैं कि मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता कि मेरा तारा कहाँ दिखेगा। पर वह अच्छा ही है। मेरा तारा तुम्हारे लिए दूसरे सब तारों में से एक तारा ही होगा और इसलिए आकाश में सभी तारों को देखना तुम्हें प्यारा लगेगा। वे सभी तुम्हारे दोस्त हो जाएँगे। इसके साथ-साथ मैं तुम्हें एक भेंट भी दे जाऊँगा...”



इतना कहकर वह हँसा। वह हँसी सुनकर मैंने कहा— “मेरे प्यारे नन्हे राजकुमार, मुझे तुम्हारी यह हँसी सुनना बड़ा प्यारा लगता है।”

उसने कहा— “यही है तुम्हें मेरी भेंट, बस यही। उसी समय की तरह, जबकि हमने पानी पिया था।”

मैंने उससे पूछा कि वह क्या कहना चाहता है?

उसने उत्तर दिया— “तारे तो सब मनुष्यों के ही होते हैं। किंतु सबके लिए वे एक ही जैसे नहीं होते। जो मुसाफिर हैं, उनके लिए सितारे मार्गदर्शक होते हैं। कुछ लोगों के लिए सितारे केवल आकाश में छोटी-छोटी रोशनियाँ ही होती हैं। विद्वानों के लिए वे समस्याएँ हैं और मेरे उस व्यापारी के लिए धन। किंतु ये सितारे चुप रहते हैं। तुम्हारे, केवल तुम्हारे लिए ही ये सितारे बिलकुल अनोखे होंगे।”

मैंने उससे फिर पूछा कि वह कहना क्या चाहता है?

“इनमें से एक सितारे पर मैं रहूँगा। वहाँ हँसूँगा। जब रात को तुम उन्हें देखोगे तब तुम को सारे सितारे हँसते हुए दिखेंगे। तुम्हारे, केवल तुम्हारे सितारे ही हँसने वाले होंगे।”

यह कहकर नन्हा राजकुमार फिर हँसा।

“समय दुख को शांत कर देता है। जब तुम्हारा दुख शांत हो जाएगा, तो तुम्हें यह सोचकर संतोष होगा कि तुम मुझे जानते थे। तुम हमेशा मेरे मित्र बने रहोगे, मेरे साथ हँसना चाहोगे। और जब कभी तुम अपनी खिड़की खोलोगे, उसी आनंद के लिए आकाश की ओर देखकर हँसोगे तो तुम्हारे अन्य मित्र ताज्जुब करेंगे। तब तुम उनसे कहोगे— हाँ, सितारों को देखकर मुझे हमेशा हँसी आती है। यह सुनकर वे तुम्हें बावला समझेंगे। मेरे कारण तुम्हारे ऊपर यह बड़ा अजीब-सा मज़ाक होगा।”

नन्हा राजकुमार फिर हँसा।

“ऐसा लगेगा कि जैसे मैंने तुम्हें सितारों की जगह अनेक ऐसी छोटी-छोटी घंटियाँ दी हैं जो हँसना जानती हैं।”

वह फिर हँसा। पर उसी समय गंभीर हो गया।

“सुनो। आज रात को तुम नहीं आना।”

मैंने उससे कहा कि मैं उसे छोड़ूँगा नहीं।



“आज रात को तुम्हें ऐसा दिखेगा कि जैसे मुझे कष्ट हो रहा है। ऐसा लगेगा कि जैसे मैं मर रहा हूँ। सचमुच! ऐसा ही है। मत आना, यह देखने। क्यों इतनी तकलीफ़ करोगे।

मैंने उससे फिर कहा कि मैं उसे छोड़ूँगा नहीं।

लेकिन वह चिंतित था।

“जानते हो, मैं तुम्हें आने के लिए इसलिए मना कर रहा हूँ कि वहाँ वह साँप होगा। वह तुम्हें डस न ले! साँप बड़े दुर्भावनापूर्ण प्राणी होते हैं। यह वाला तो तुम्हें केवल मजे के लिए भी काट सकता है...”

मैंने कहा— “मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।”

किंतु उसे एक सात्वनामय विचार आया। फिर कुछ सोचकर उसकी चिंता जाती रही—

“हाँ। यह सत्य है कि दूसरी बार काटने के लिए उनके पास विष नहीं होता।”

उस रात मैंने उसे जाते हुए नहीं देखा। वह बिना आवाज़ किए मेरे पास से उठकर चला गया। दौड़कर जब मैं उस तक पहुँचा, तब वह दृढ़तापूर्वक तेज़ी के साथ चल रहा था। उसने मुझसे केवल यह कहा— “अच्छा! तुम आ गए।”

उसने मेरे हाथ को पकड़ लिया। किंतु वह अभी भी चिंतित था।

“तुम्हें नहीं आना चाहिए था। तुम्हें कष्ट होगा। ऐसा लगेगा जैसे कि मैं मर गया हूँ, किंतु वह सच नहीं होगा।”

मैंने कुछ नहीं कहा।

“जानते ही हो न? बहुत दूर जाना है। इस शरीर को उठाकर नहीं ले जा सकता। बड़ा भारी है।”

मैंने कुछ नहीं कहा।

“मेरे चले जाने के बाद यह शरीर फेंका हुआ छिलका लगेगा। पुराने छिलके को लेकर दुख क्यों करना।”

मैं कुछ नहीं बोला। इससे वह कुछ निरुत्साहित हो गया। किंतु उसने फिर-से एक बार प्रयत्न किया— “बड़ा अच्छा होगा। मैं भी सितारों को देखूँगा। सारे सितारे उस कुँए और जंग लगी हुई घिरनी जैसे ही होंगे। सभी





मुझे ताजा पानी पिलाते हुए होंगे।” मैंने कुछ नहीं कहा।

“बड़ा मजा होगा। तुम्हारे लिए वे पचास कोटि छोटी-छोटी घंटियाँ होंगी और मेरे लिए वे पचास कोटि ताजे पानी के झरने।”

इसके बाद उसने भी कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह रो रहा था...

थोड़ी देर बाद वह बोला कि अब उसे अकेले जाना है। वह बैठ गया, क्योंकि वह डर रहा था। उसने फिर कहा— “जानते हो मेरा फूल। मेरे ऊपर उसकी जिम्मेदारी है। वह बेचारा कितना कमजोर है! और बड़ा सरल भी है! उसके चार काँटे तो हैं, किंतु इतनी बड़ी दुनिया की मुश्किलों का सामना करने के लिए वे काफ़ी नहीं हैं।”

मैं और खड़ा नहीं रह सकता था, मैं भी बैठ गया।

“बस! अब, सब हो गया...”

उसको अभी भी कुछ संकोच हुआ। वह उठ गया और उसने एक कदम उठाया। मैं उठ नहीं सका।

और कुछ नहीं, केवल उसके टखने के पास एक पीला प्रकाश दिखाई दिया। वह एक क्षण भर के लिए निश्चल हो गया। वह रोया नहीं। कटे हुए पेड़ की तरह धीमे से गिर पड़ा। रेत था इसलिए कोई आवाज़ भी नहीं हुई।



तब से अब तक छह वर्ष बीत गए हैं। मैंने यह कहानी किसी को नहीं बताई। जब मैं घर लौटा था, तो साथियों को मेरे जीवित वापस पहुँचने से संतोष हुआ था। मैं दुखी था, किंतु मैंने उनसे केवल यही कहा कि मैं थका हुआ हूँ।

अब मेरा दुख कुछ शांत हो गया है, पर पूरा-पूरा नहीं। किंतु मैं यह जानता हूँ कि नन्हा राजकुमार अपने ग्रह पर ही गया है, क्योंकि मैंने सूर्योदय के समय देखा था कि उसका शरीर वहाँ नहीं था। आखिर वह शरीर कोई भारी नहीं था... रात को सितारों का संगीत सुनना भी मुझे प्यारा लगता है। ऐसा लगता है कि जैसे पचास कोटि छोटी-छोटी घंटियाँ बज रही हों।

किंतु एक असाधारण बात हुई... जब मैंने नन्हे राजकुमार की भेड़ के लिए मोहरी का चित्र बनाया था, तो उसका चमड़े का फीता बनाना भूल गया। वह उसे अपनी भेड़ के मुँह पर कभी भी बाँध नहीं पाया होगा। इसलिए मैं सोचता रहता हूँ— उसके ग्रह का क्या हुआ होगा? शायद उसके फूल को भेड़ ने खा लिया होगा।

कभी-कभी मन कहता है— “नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि नन्हा राजकुमार तो रात को रोज़ अपने फूल को काँच के ग्लोब से ढँकता है। वह भेड़ पर नज़र भी होशियारी से रखता है...।” जब यह सोचता हूँ, तो मन में आनंद होता है। सारे सितारों की हँसी मीठी लगने लगती है।

किंतु फिर सोचता हूँ— “कभी-कभी आदमी से चूक हो जाती है, तब वही काफ़ी होती है! किसी दिन संध्या को अगर वह ग्लोब रखना भूल गया या रात को भेड़ बिना आवाज़ किए डिब्बे से निकल गई तो...?” यह बात जब मन में आती है, तो वे छोटी-छोटी घंटियाँ आँसू बन जाती हैं।

यही तो है गहरा रहस्य, आपके लिए या मेरे लिए। जो नन्हे राजकुमार को प्यार करते हैं, अगर कभी उन्हें यह पता चले कि कहीं न जाने किस जगह किसी देखी-अनदेखी भेड़ ने, एक गुलाब का फूल खा लिया है, तो इस जगत् में सब कुछ बदल जाएगा।



आकाश में सितारों को देखो और अपने-आप से पूछो कि बात क्या है? क्या भेड़ ने फूल खा लिया? तब तुम देखोगे कि किस तरह सब कुछ बदल जाता है।

कोई सयाना कभी भी यह नहीं समझ पाएगा कि यह बात कितनी महत्वपूर्ण है।

यह मेरे लिए संसार में सबसे प्यारा और सबसे उदास दृश्य है। यह दृश्य वैसा ही है, जैसा पिछले पृष्ठ पर है। किंतु मैंने इसे दोबारा इसलिए बनाया है क्योंकि वह तुम्हारी स्मृति में बैठ जाए। यह वही स्थान है, जहाँ पर नन्हा राजकुमार पृथ्वी पर उतरा था और जहाँ से अदृश्य भी हो गया था।

इसे अच्छी तरह देख लो, जिससे कि कभी अगर अफ्रीका की यात्रा करो तो इसे पहचान सको। और अगर इस स्थान पर पहुँच जाओ, तो कृपया जल्दी नहीं करना। सितारे के ठीक नीचे थोड़ी प्रतीक्षा करना। अगर तुम्हें ऐसा एक छोटा-सा लड़का दिखाई दे, जो हँसता है और जिसके बाल सुनहरे हैं, किंतु जो प्रश्नों का उत्तर कभी नहीं देता, तो तुम पहचान जाओगे कि वह कौन है। अगर ऐसा हुआ, तो मेरी उदासी दूर करने का उपाय करना। कृपया मुझे खबर देना कि वह वापस आ गया है।



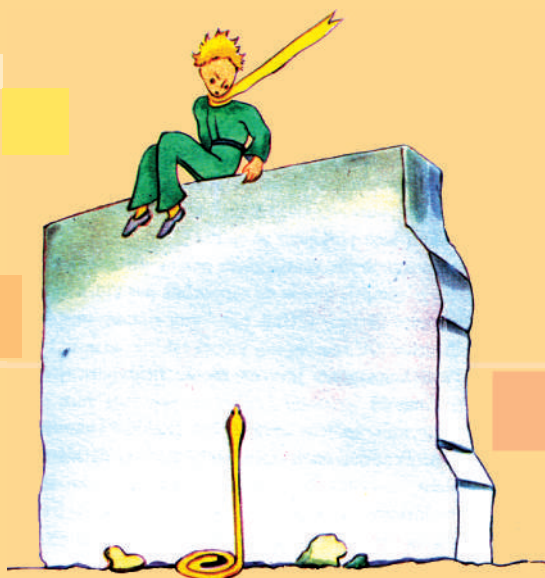
अनुवादक परिचय

देवी प्रसाद

अक्टूबर 1921 को देहरादून में जन्मे देवी प्रसाद ने 1938 में शांति निकेतन से कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वहाँ उन्हें गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर का सान्निध्य भी प्राप्त हुआ। सन् 1944 में वे बच्चों के लिए कला और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने गांधी जी के आश्रम सेवाग्राम गए। यहाँ गांधी जी की शिक्षा पद्धति की पत्रिका 'नई तालीम' का संपादन भी किया।

वर्ष 1962 से 1972 तक उन्होंने युद्ध विरोधी अंतर्राष्ट्रीय संस्था, 'वॉर रजिस्टर्स इंटरनेशनल', लंदन में पहले महासचिव के रूप में अपना योगदान दिया और बाद में तीन साल तक अध्यक्ष का पद संभाला। 1983 में वे भारत वापस आ गए। इस दौरान उन्होंने विश्वशांति के लिए अपना प्रयास जारी रखा। वे भारतीय सिरामिक्स कला के अग्रणी हैं जिसके लिए उन्हें वर्ष 2007 में ललित कला अकादमी द्वारा 'ललिता कला रत्न' से सम्मानित किया गया।

देवी प्रसाद की पुस्तकों में प्रमुख हैं – बच्चों की कला और शिक्षा, पगडंडी (रवींद्रनाथ ठाकुर की पुस्तक लिपिका का हिंदी अनुवाद), पीस एजुकेशन और एजुकेशन फ़ॉर पीस, रवींद्रनाथ की शिक्षा और चित्रकला, आर्ट : द बेसिस ऑफ़ एजुकेशन, पॉर्टर्स मेक युअर ओन टूल्स एंड इक्विपमेंट, एजुकेशन फ़ॉर लिविंग क्रियेटिवली एंड पीसफुली तथा वॉर इज़ ए क्राइम अगेंस्ट ह्यूमैनिटी।



2054

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-772-8